भगत जन सो

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विचों)

सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

भगत जनां प्रभ देवे माण, ईशर जोत जगत पलटाए। भगत जनां प्रभ देवे माण, जोत निरञ्जण देह विच्च आए। भगत जनां प्रभ देवे माण, खोल्ह किवाड़ दरस दिखाए। भगत जनां प्रभ देवे माण, गुरसिख महिंमा आप जणाए। भगत जनां प्रभ देवे माण, गुरबाणी विच्च नाम लिखवाए।

भगत जनां प्रभ देवे माण, जुगो जुग अट्टल रह जाण। भगत जनां प्रभ देवे माण, गुरसिखां विटुह कुरबाण। भगत जनां प्रभ देवे माण, कलिजुग विच्च गुर लीआ पछाण। भगत जनां प्रभ देवे माण, मिल संगत जो हरि जस गाण । भगत जनां प्रभ देवे माण, जोत सरूप प्रभ जोत जगाण। भगत जनां प्रभ देवे माण, देवे दात अपार मन में उपजे शब्द ज्ञान । भगत जनां प्रभ देवे माण, कोई ना जाए निरास गुर चरन लाए ध्यान। भगत जनां प्रभ देवे माण, महाराज शेर सिँघ बणे बबाण।

भगत जनां जाईए कुरबान, जिन की महिंमा प्रभ आप गणाए। भगत जनां जाईए कुरबान, धरू प्रहिलाद प्रभ संग समाए। भगत जनां जाईए कुरबान, भगत अमरीक पार लंघाए। भगत जनां जाईए कुरबान, जन्म दरोपती माण दवाए। भगत जनां जाईए कुरबान, बिदर सुदामे दरस दिखाए। भगत जनां जाईए कुरबान, घर जिन्हां दे ईशर आए। भगत जनां जाईए कुरबान, जै दिउ नामा चरन लगाए। भगत जनां जाईए कुरबान, त्रिलोचण ना दुःख उठाए। भगत जनां जाईए कुरबान, बैणी सैण प्रभ वेस वटाए। भगत जनां जाईए कुरबान, ईशर जिन्हां दे दर आए। भगत जनां जाईए कुरबान, गनका अजामल पूतना सभ जोत मिलाए। भगत जनां जाईए कुरबान, कबीर ताईं सचखण्ड वखाए। भगत जनां जाईए कुरबान, नाम देउ रविदास तराए। भगत जनां जाईए कुरबान, बद्धक तीर कृष्न चरन लगाए। भगत जनां जाईए कुरबान, जिथ्थे ईशर दरस दिखाए। भगत जनां जाईए

कुरबान, जुगो जुग प्रभ दरस दिखाए । भगत जनां जाईए कुरबान, जोत सदा प्रभ संग समाए। भगत जनां जाईए कुरबान, कलिजुग भए अवतार शेर सिँघ नाम रखाए। (४ विसाख २००७ बि)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

कलिजुग भगत पछाण, जिन्हां गुर दर्शन पाया। कलिजुग भगत पछाण, जिन्हां सोहँ गाया। कलिजुग भगत पछाण, जिन्हां गुर माण दवाया। कलिजुग भगत पछाण, जिन्हां हरि मंगल गाया। कलिजुग भगत पछाण, जिन्हां गुर चरन लगाया। कलिजुग भगत पछाण, जिन्हां गुर चरनी सीस झुकाया। कलिजुग प्रगट कीए भगत, भगवान आण एह बिरद रखाया।

भगत मेरे दी एह वड्डिआई। अचरज विच्च अचरज मिल जाई। विस्मादे विस्माद समाई। ब्रह्म सरूप ब्रह्म जोत जगाई। गुरसिख उपजे नाउँ, जिन एह बूझ बुझाई । बेमुख पाए ना ठाउँ, दर दर धक्के खाई। सोहँ सच्ची नाओ, गुरसिख पार लंघाई। महाराज शेर सिँघ किरपाल, भगतन दी पैज रखाई।

भगत होण गुरसिख, जिन्हां रंग माणयां। भगत होण गुरसिख, चलण गुर के भाणयां । भगत होण गुरसिख, जिन्हां सतिगुर पछाणयां। भगत होण गुरसिख, जगत विच्च वांग निमाणयां । भगत होण गुरसिख, ईशर पिता आप पूत अंजाणयां। भगत होण गुरसिख, जिन्हां सोहँ शब्द पछाणयां। (११ विसाख २००७ बि)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

भगत जन सो, जो दर सुहंदे। भगत जन सो, जो कल तरंदे। भगत जन सो, जो कर दरस सरन पड़ंदे। भगत जन सो, जो जिस बख्शे जन आप बख़शिंदे। भगत जन सो, मिल साध संगत जन दुतर तरंदे। भगत जन सो, जन पाया मुरार मनोहर मुकन्दे। भगत जन सो, आत्म रस निझरों झिरंदे। भगत जन सो, कँवल नाभ अमृत बूंद मुख चुविंद । भगत जन सो, जिन प्रभ दसम दवार खुलिंदे। भगत जन सो, जो कलिजुग साध संगत मिल बहिंदे। भगत जन सो, जो निहकलंक दरस करिंदे। भगत जन सो, जिन महाराज शेर सिँघ प्रभ गोबिन्दे। (२ वसाख २००८ बि)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

सन्त जनां प्रभ जोत जगाए। सन्त जनां प्रभ विच्च समाए। सन्त जनां प्रभ अमृत झिरना देह झिराए। सन्त जनां प्रभ अमृत रस मुख चुआवे। सन्त जनां प्रभ अमृत झिरना नभ कँवल कँवल नभ मुख चुआवे। सन्त जनां प्रभ जोत सरूपी मेल मिलाए। सन्त जनां प्रभ साचा सति ज्ञान दुआवे। सन्त जनां प्रभ एका दूजा भउ चुकाए। सन्त जनां प्रभ सच घर दी बूझ बुझाए। सन्त जनां प्रभ आपणा भेव आप खुल्हाए। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए।

सन्त जनां प्रभ धीर धराए। सन्त जनां प्रभ साचा आत्म सीर पिलाए। सन्त जनां हउमे विच्चों पीड़ गुआए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां धीर धराए।

सन्त जनां प्रभ सरधा पूर। सन्त जनां प्रभ आत्म देवे सति सरूर। सन्त जनां प्रभ आत्म जोत करे नूरो नूर। सन्त जनां प्रभ भंडार करे भरपूर। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ आसा मनसा पूर।

सन्त जनां प्रभ लाज रखाए। सन्त जनां प्रभ माण दुआए। सन्त जनां प्रभ साचा नाम झोली पाए। सन्त जनां प्रभ एका ज्ञान सुरत दुआए। सन्त जनां प्रभ प्रगट जोत जोत सरूप दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए।

सन्त जनां प्रभ दे वड्डिआई। सन्त जनां प्रभ साची भिच्छया पाई। सन्त जनां चरन धूड़ मस्तक लाई। सन्त जनां साची जोत विच्च ललाट जगाई। सन्त जनां ऊँच पदवी प्रभ दर ते पाई। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद दया कमाई।

सन्त जनां प्रभ चरन भरवासा। सन्त जनां प्रभ चरन रहिरासा। सन्त जनां प्रभ करे बन्द खुलासा। सन्त जनां प्रभ करे जोत प्रकाशा। सन्त जनां प्रभ पूर कराए आसा। सन्त जनां प्रभ साचा सद रक्खे विच्च वासा। झूठी सृष्ट वेखे तमाशा। सन्त जनां प्रभ होए दासन दासा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा देवे चरन भरवासा।

सन्त जनां प्रभ सदा संग। एका नाम चढ़ाए रंग। अमृत झिरना झिराए विच्च देह गंग। साचा प्रभ साचा वर साचा दर जन सन्त लिआ मंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई सदा अंग संग।

सन्त जनां सर्ब ज्ञाता। सन्त जनां एका मिल्या भगवन्त भराता। सन्त जनां प्रभ सदा रंग राता। सन्त जनां अमृत बूंद पीए स्वांत स्वांता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत मिलाता। (१ माघ २००८ बि)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

सन्त जनां प्रभ साचा पाया। सन्त जनां प्रभ मेल मिलाया। सन्त जनां प्रभ भउ चुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाया।

सन्त जनां प्रभ आस पुजाए। सन्त जनां प्रभ होए सहाए। सन्त जनां प्रभ साचा राह दिखाए। सन्त जनां प्रभ आत्म साची जोत जगाए। सन्त जनां अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां प्रगट जोत दरस दिखाए।

सन्त जनां प्रभ भए सहाया। सन्त जनां प्रभ आप पित माया। सन्त जनां प्रभ साचे मार्ग लाया। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ होए सहाया।

सन्त जनां प्रभ सद रखवाला। सन्त जनां सदा प्रितपाला। सन्त जनां आत्म जोत करे उजाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साचा दीपक बाला। सन्त जनां प्रभ साची ओट। आत्म शब्द जगावे साची जोत। सन्त जनां प्रभ आत्म कढ्ढे हउमे खोट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां दी साची ओट।

सन्त जनां सिर प्रभ हत्थ टिकाए। सन्त जनां प्रभ माण दवाए। सन्त जनां साची दरगाह माण दवाए। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सरन लगाए।

सन्त जनां प्रभ नाम जपाया। सन्त जनां प्रभ सोहँ दात झोली पाया। सन्त जनां प्रभ साचे सच मार्ग लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर साचा मंग वर घर साचा पाया।

सन्त जनां जाओ बलिहार। प्रभ साचा सोहण चरन दवार। सन्त जनां मिले वड्डिआई विच्च संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस निहकलंक नर अवतार।

सन्त जनां सर्ब सुख माणया। सन्त जनां पूरन ब्रह्म ज्ञानया। सन्त जनां निहकलंक तेरा जामा सति कर मानया। सन्त जनां होए विस्माद प्रभ विष्नूं भगवानया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, देवे माण जो जन आए चरन निमाणयां।

सन्त जनां आत्म भरपूर। सन्त जनां प्रभ आत्म उपजावे साची तूर। सन्त जनां प्रभ एका देवे शब्द सरूर। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी देवे नूर।

सन्त जनां प्रभ उपजावे साची धुंन । सन्त जनां प्रभ खोलू वखावे आत्म सुन्न । सन्त जनां प्रभ चरन लगावे विच्च मातलोक चुण । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव ना जाणे तेरे गुण।

सन्त जनां सिर हत्थ टिकाया। सन्त जनां प्रभ होए सहाया। सन्त जनां प्रभ साचा दीपक देह जगाया। सन्त जनां साची जोत करे रुशनाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाया।

सन्त जनां सदा बलिहार। सन्त जनां प्रभ साचा जाए तार। सन्त जनां देवे वड्डिआई निहकलंक विच्च संसार। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच शब्द भरे भंडार ।

सन्त जनां प्रभ धीर धराया। सन्त जनां प्रभ आत्म साचा दीप जगाया। सन्त जनां प्रभ साचे साची दरगाह माण दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीवां तेरा भेद ना पाया।

सन्त जन मिले प्रभ सारंग धर। सन्त जन प्रभ सरनी गए पर। सन्त जन गुर चरन लाग गए तर। सन्त जन अन्तकाल ना जाइण मर। सन्त जन प्रभ अमृत झिरना झिराए साचा सर। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दिसावे साचा दर।

सन्त जनां प्रभ दर सच्चा दरबार। सन्त जनां प्रभ देवे दरस अगम्म अपार। सन्त जनां दिसावे निहकलंक नरायण नर अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जगत पसार।

सन्त जनां उपजावे धुंन अनाद अनादी। सन्त जनां प्रभ मिले आदि जुगादी। सन्त जनां प्रभ चरन लाग आत्म साधी। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप सदा विस्मादी।

सन्त जनां प्रभ सद विस्मादे। सन्त जनां एका धुंन उपजावे साची नादे। सन्त जनां शब्द चलावे बोध अगाधे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां विच्च सद विस्मादे ।

सन्त जनां सदा प्रभ वसे। सन्त जनां आपणा भेव आप प्रभ दस्से। सन्त जनां प्रभ करे प्रकाश जिउँ रव सस्से। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी हिरदे वसे।

सन्त जनां प्रभ भेद खुल्हाया। सन्त जनां प्रभ राग सुणाया। सन्त जनां प्रभ अनहद साची धुन उपजाया। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुन्न समाध खुल्हाया ।

सन्त जनां प्रभ संग सुहेला। सन्त जनां प्रभ जोत सरूपी कराए मेला। सन्त जनां संग अचरज खेल पारब्रह्म कल खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां साचा सज्जण सुहेला।

सन्त जनां प्रभ दया धारी। सन्त जनां प्रभ आत्म करे उजिआरी। सन्त जनां देवे दरस आप गिरधारी। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ साची दरगाह देवे सिकदारी।

सन्त जनां सच धाम नयारा। सन्त जनां प्रभ साचा देवे मोख दवारा। सन्त जनां साची जोत मिले विच्च संसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां पार उतारा।

सन्त जनां प्रभ पार उतारे। किरपा करे आप बनवारे। सोहँ उपाए गिरधारे। जामा मातलोक विच्च धारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारे।

सन्त जनां प्रभ सुणी पुकारा। प्रभ अबिनाशी लए अवतारा । जोत सरूपी कीआ अकारा । कलिजुग मिटाए अन्ध अन्धयारा। सतिजुग वरताए सति करे वरतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। (२१ माघ २००८ बि)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

सन्त जनां देवे वड्डिआई। सन्त जनां प्रभ पैज रखाई। सन्त जनां प्रभ अबिनाशी सेव कमाई। सन्त जनां प्रभ साचे पूरन आस कराई। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगाई।

सन्त जनां प्रभ तारनहारा। सन्त जनां प्रभ देवे शब्द अधारा। सन्त जनां प्रभ साचे आत्म गुण विचारा। सन्त जनां देवे साची धुन शब्द धुनकारा। सन्त जनां खोल्ह देवे प्रभ दसम दवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां सदा काज सवारा।

सन्त जनां प्रभ दरस दिखाए। सन्त जनां प्रभ बूझ बुझाए। सन्त जनां प्रभ आत्म भेव गूझ खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां दे विच्च समाए।

सन्त जनां प्रभ सदा समावे। सन्त जनां प्रभ एका धुन उपजावे। सन्त जनां प्रभ अगाध बोध बोध अगाध शब्द जणावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगावे।

गुरमुख साचे भउ चुकाया। सन्त जनां प्रभ लेख लिखाया। सन्त जनां प्रभ वेख वखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां दे विच्च समाया।

सन्त जनां प्रभ सदा समीप। सन्त जनां प्रभ जोत जगाए आत्म दीप। सन्त जनां प्रभ साचा मीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस सद रसना चीत ।

सन्त जनां प्रभ आत्म वसे। सन्त जनां प्रभ साचा घर दस्से। सन्त जनां प्रभ साचा रसना रसे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां सद हिरदे वसे।

सन्त जनां प्रभ होए सहाया। प्रभ अबिनाशी रसना गाया। रंग रंग रंग प्रभ आत्म साचा रंग चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां सिर हत्थ टिकाया। (२२ माघ २००८ बि)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

सन्त जनां वर घर पाया। सन्त जनां हरि दर बुझाया। सन्त जनां सच मार्ग लाया। सन्त जनां भेव चुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाया।

सन्त जनां सद बलिहार। सन्त जनां प्रभ जोत अकार। सन्त जनां एका दिसे दर दरबार। सन्त जनां निर्मल जोत करे अकार। सन्त जनां प्रभ बख्शे एका चरन प्यार। सन्त जनां सोहँ शब्द उपजे सच्ची धुनकार। सन्त जनां एका बणाए दिखाए चलाए रखाए साची धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप करतार।

सन्त संग प्रभ रंग रंगाया। सन्त रंग प्रभ इक्क मजीठ चढ़ाया। सन्त रंग आत्म उपजे जोत सवाया। भगतन जंग काम क्रोध हँकार संग कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ खण्डा हत्थ फड़ाया। (१७ चेत २००६ बि)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

सन्त जनां प्रभ आप उठावणा। सन्त जनां प्रभ भरम चुकावणा। सन्त जनां प्रभ सरन लगावणा। सन्त जनां प्रभ पूरन घाल करावणा। सन्त जनां सोहँ सच्चा धन्न माल झोली पावणा। सन्त जनां एका आत्म लाल रखावणा। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस सद रसना गावणा।

सन्त जनां देवे वड्डिआई। सन्त जनां प्रभ होए सहाई। सन्त जनां मन वज्जे वधाई। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत जमन किनारे होए सहाई। (१८ जेठ २००६ बि)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

सन्त जनां प्रभ आप हलूणयां। आप मिटाए ताईआं धूणीआं। आप गवावे दुःख

मिटावे आंदरां लूहणीआं। आप चुकावे मुकावे खवावे सुक्कीआं अलूणीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत प्रगटावे सन्त जनां जोत जगाए कराए सवाईआं दूणीआं।

सन्त जनां जोत जगा। सन्त जनां दुःख मिटा। सन्त जनां दरस अमोघ दिखा। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पावे साचा राह।

सन्त जणाए उठाए आप। सन्त जन जगाए आप। सन्त जन उपजाए आप। सन्त जन सोहँ शब्द सुणाए आप। सन्त जन आपे आप विच्च समाए आप। सन्त जन माई बाप अखवाए आप। सन्त जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए आप।

सन्त जनां साची सारा। सन्त जनां देवे शब्द हुलारा। सन्त जनां खोले आपे आप दसम दवारा। सन्त जनां आपे आप उतारे पाप पहाड़ां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां सद रक्खे प्यारा।

सन्त जनां साचा प्यार। सन्त जनां प्रभ देवे तार। सन्त जनां एका एक दर एका घर बाहर। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साची सरकार।

जन सन्त दूत पठईआ। जन सन्त साचा नाम रसना सूत कतईआ। सन्त जन जन सन्त एका रूप आप रखईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई आप चढ़ाए साची नईआ।

सन्त जनां साचा नाउँ। आप बहाए साचे थाउँ। आप दिसाए प्रभ साचा रूप अगम्म अथाहो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुर वासी बैकुण्ठ निवासी सद सद सद रसना गाओ।

सन्त जनां प्रभ सारंग धर। सन्त जनां प्रभ आया घर अवतार नर। सन्त जनां प्रभ अबिनाशी दरस कर कलिजुग तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच वरताए सच भंडार लगाए आपे आप दवाए। (२४ सावण २००६ बि)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

सन्त जनां घर साचा पाया। सन्त जनां हरि रिदे वसाया। सन्त जनां भाण्डा भरम भउ गवाया। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन लगाया ।

सन्त जनां हरि रसना गाया। सन्त जनां थिर घर वासी थिर घर में पाया। सन्त

जनां रिध सिध होए दासी, प्रभ अबिनाशी सिर हत्थ टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा आप आपणी सेवा लाया।

सन्त जनां हरि हिरदे वस्सया। खोल्ह कपाट राह साचा दस्सया। ना आवे घाट जगे जोत विच्च ललाट, होए प्रकाश कोट रव सस्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा साची दरगाह जाए वस्सया।

सन्त जनां हरि काज सवारे। आपे आवे चल दवारे। एका जोत करे अकारे। जोत सरूप निहकलंक नरायण नर अवतारे। आए घर खाली भरे भंडारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां दुत्तर तारे।

सन्त जन प्रभ साचे चुण। आप उपजाए शब्द धुन। आप खुल्हाए आत्म सुन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण जाणे तेरे गुण।

गुणवन्त गुण विचारे। पारब्रह्म अपर अपारे। कलिजुग भेख सर्ब संसारे। माया अगन काया चुल्हिआ, आप चलाए बहत्तर नाड़े । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तम अन्तकाल बेमुख जीव अगन जोत विच्च साड़े।

सन्त जनां हरि माण दवाए। पूरन काम आप कराए। एका सोहँ साचा नाम जपाए । दोअं दोआ भेव मिटाए। अठारां वरन सरन लगाए। चार वरन रहण ना पाए। एका एकँकार आपणी सरन रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए ।

सन्त जनां हरि रस माणया। प्रभ अबिनाशी साचा जाणया। पूरन ब्रह्म आप पछाणया । सच कर्म आत्म तुट्टा अभिमाणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दरगाह साचा देवे माणया।

दरगाह साची सन्त परवान। साचे सन्त इक्क रंग समान। आवण जावण चुक्के कान। लक्ख चुरासी मिटे, ना जाए मड़ी मसान। एका इक्क हो जाए जोत मिलाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

सन्त जनां हरि सुण पुकार। मातलोक लए अवतार। पुरी घनक सुत्ता पैर पसार । सृष्ट सबाई अन्ध अंधिआर। गुरमुख विरला पावे सार। जिस जन देवे चरन प्यार। हरन फरन दए निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार।

सन्त जनां हरि माण दवाया। आप आपणा ताण रखाया। एका बाण शब्द लगाया। होए परवान जिस रसना गाया। छुट्टा आवण जाण, लक्ख चुरासी गेड़ चुकाया । आप बिठाए विच्च बबाण, वेले अन्त होए सहाया। सर्ब घटां घट जाणी जाण, भेव किसे ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया।

सन्त जना हरि रंग राते। आपे मेल मिलाया, प्रभ अबिनाशी पुरख बिधाते। गुर गुर गुरसिख गुर संगत गुर चरन साचे नाते। सोहँ साचा नाउँ जीव जप दिवस राते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख आपे खड़ा रहे सरहाणे तेरे सुत्तयां राते।

सन्त जनां हरि दे वड्डिआई। दर घर साचे माण रखवाई। कलिजुग जीव भाण्डे काचे, वेले अन्त कल दे भन्नाई। गुरसिख साचे सच दर वाचे, सच घर दे बहाई। बेमुख दर आए नाचे, कोई ना देवे थाईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप साचो साचे, आपणे भाणे सद रहाई।

सन्त हरि हरि सन्त दोए एका। जन सन्तां करे बुद्ध बिबेका। एका देवे चरन टेका। कलिजुग माया ना लागे सेका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक रंग रंगाए एका। (पहली माघ २००६ बि)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगतां सदा रंग एक, वड्डा छोटा नज़र कोई ना आइंदा। अबिनाशी करता बुद्धि करनहार बिबेक, मन वासना दुरमत मैल धवाइंदा। चरन प्रीती साची रीती दस्से धुर दी टेक, टिक्का मस्तक नाम धूढ़ी चरन छार इक्क छुहाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बिन अक्खां सभ नूं लए पेख, लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेख वखाइंदा। पूरब जन्म लहणा देणा जन्म कर्म लेखा लिखत भविख्त जाणे रेख, रिखी मुनी गुरमुख सन्त सुहेले आप उठाइंदा। नाम सुनेहड़ा देवणहारा सच संदेश, धुर फुरमाणा श्री भगवाना आप सुणाइंदा। जन भगतां वेखणहारा सच्चा सुच्चा देस, जिस गृह आत्म नाल परमात्म रह के सोभा पाइंदा। माण वड्डिआई देवणहारा विषेश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा सच्चा घर, सच दवारा एकँकारा विच्च संसारा, चरन कँवल उपर धवल धर्म धार इक्क जणाइंदा। (२३ चेत श सं २ सांझी राम दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगतां नाम पवण मिले ठंडी, जगत बवला रहण कोई ना पाईआ। शब्द धार दी मिले अगम्मी सुगंधी, दुरगंधी अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। दीन मज़्ब ना रहे पाबन्दी, जात पात ना कोई लड़ाईआ। आत्मा परमात्मा मिल के हो जाए चंगी, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। आवण जावण राए धर्म दी रहे ना बन्दी, चुरासी गेड़ ना कोई भवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मिल जाए धुर दा संगी, संगत वल हो के धुर दा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक्क अनन्दी, अन्तर अन्तर रस निझर निझर झिरना झरोके विच्चों आप झिराईआ। (२३ चेत श सं २ पूरन सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत तेरा शब्द ज्ञान, जगत ज्ञानीआं हत्थ मूल ना आइंदा। शास्त्र सिमरत जिस दा देंदे परमाण, सो परवाना हुक्म नाम सुणाइंदा। चरन प्रीती एकँकार इक्को वार कर ध्यान, इक्क इकल्ला लेखा सर्ब मुकाइंदा। जोधे सूरबीर बणो बलवान, बलधारी आप समझाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलाओ श्री भगवान, सांझा यार सगला इक्क अखवाइंदा। बिन साहिब सतिगुर किसे दी होवे ना मात कल्याण, पुस्तक पढ़यां पार ना कोई कराइंदा। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त जो दर्शन करे आण, दासी दास हो के वेख वखाइंदा। दरगाह साची सच दवारे देवे इक्को माण, मेहरवान सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां शमां जगाए आण, दीपक आपणे नाल डगमगाइंदा। (२३ चेत श सं २ बीबी चन्नों दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत तेरा पर्दाथ चंगा नालों भोजन छत्ती, गिणती दी लोड़ रहे ना राईआ। इस दा रस स्वाद सोहणा अव्वलड़ा नालों दन्द बत्ती, जिह्वा चक्ख ना कोई समझाईआ। इक्क इकल्ला साहिब स्वामी अन्तरजामी जाणे कमलापाती, कामल मुर्शद जो खा के खुशी मनाईआ। जुग चौकड़ी नित्त नवित्त जिस दी धार चले सुच्ची, सच साजण आप बणाईआ। एह कोई जगत विहार वाली नहीं पक्की रोटी, पेट भरन दी आस ना कोई रखाईआ। मेहर नज़र कर के सिरफ गुरमुख चाढ़े चोटी, चट्टीआं तों लैणे बचाईआ। अन्तम मेला कर के धुर दी जोती, जोत जोत विच्च समाईआ। घड़ी आवण ना देवे औखी, राए धर्म ना कोई सज़ाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां पढ़ लई अगम्मी पोथी, पुस्तकां तों पल्लू गए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच भंडारे दी खोल्ह के कोठी, लंगर भगतां दिता लगाईआ। (२३ चेत श सं २ वकील सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत तेरी मंजल रूहानी, रूहे रवां दया कमाइंदा। किरपा करे खाक जिस्मानी, जिस्म इसम इक्क दृढ़ाइंदा। मिले मेल महबूब आसमानी, अहिसान सिर ना कोई रखाइंदा। सच दवार बख्शे इक्क महमानी, महमान निवाज़ आपणी दया कमाइंदा। हरिजन वस्त दिसे ना कोई बेगानी, धुर दी दात झोली पाइंदा। किरपा करे साहिब गुण निधानी, गुणवन्त गुण वखाइंदा। जिन्हां बख्शे चरन प्रीती सच ध्यानी, पड़दा उहला द्वैत मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन वेखे पवित पुनीत परानी, पूरन ब्रह्म आप समझाइंदा। (२४ चेत श सं २ महिंदर कौर दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत तेरी जगदी जोत, जोती जाता आप जगाइंदा। भाग लगा के काया मन्दर साचे कोट, महल्ल अट्टल उच्च मनार आप सुहाइंदा। शब्द अगम्मी ला के आपणी चोट, सोई सुरती मात उठाइंदा। झगड़ा मुका के वरन गोत, आत्म ब्रह्म सच समझाइंदा। बुद्धि वाली रहे ना कोई सोच, अनभव आपणा खेल वखाइंदा। नाम खुमारी अंदर करे मदहोश, मन वासना कूड़ी क्रिया आप बदलाइंदा। सच प्रीती अन्तर करे सन्तोश, अगनी अग्ग ना कोई तपाइंदा। गुण निधाना दस्स के इक्क सलोक, सोहँ ढोला आप पढ़ाइंदा। लेखा मुका के लोक परलोक, सचखण्ड दवारा इक्क वखाइंदा। जिथ्थे आदि जुगादि इक्को मौज, दूजा रूप ना कोई बदलाइंदा। जन भगतां संग जुग चौकड़ी करदा रहे चोज, चोजी प्रीतम वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाइंदा।

जन भगत तेरा साचा नूर, अर्शां तों परे नज़री आईआ। जिथ्थे वसे हरि हज़ूर, सर्ब कला भरपूर डेरा लाईआ। पैंडा रहे ना नेड़े दूर, मंज़ल पन्ध ना कोई वखाईआ। जोती जाता इक्को नज़री आए ज़हूर, ज़रूरत अवर रहे ना राईआ। नाता तुट जाए कूड़ो कूड़, सति सच मिले वडयाईआ। मस्तक मिलदी रहे अगम्मी धूड़, धूढ़ी टिक्का सरगुण आप रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा वेख वखाईआ।

हरिजन तेरी पूरी मनसा, मन ममता मोह मिटाइंदा। सोहँ रूप बणा के हँसा, माणक मोती चोग चुगाइंदा। कोटन जन्म दा लहणा चुका के सहँसा, सिर आपणा हत्थ रखाइंदा। भगत भगवान मिल के बणाए धुर दा बंसा, बंसावली आपणी आपणे हत्थ रखाइंदा। मनुआ रक्खे ना कोई संसा, हउमे रोग कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाइंदा।

जन भगत तेरी धुर दी पूजा, सिल पूजस लोड़ रहे ना राईआ। भाओ भेव खुल्हे गूझा, पड़दा उहला दए उठाईआ। निर्मल निर्मल साफ़ पवित्र करे बुद्धा, चिट्टी धार विच्च प्रगटाईआ। जो प्रभ सरनाई झूजा, सच दवारे दए टिकाईआ। जिथ्थे अवर ना कोई दूजा, निरगुण निरवैर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लोकमात लाए बूटा, पत्त डाली आप महकाईआ।

जन भगत तेरा लेखा विच्च जहान, जहालत विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। मेल मिला श्री भगवान, भगवन आपणा रंग चढ़ाईआ। मुहब्बत विच्च बण महमान, दर दर आपणी अलख जगाईआ। लेखे ला पक्का पकवान, पाकीज़ा अंदरों दए कराईआ। दरगाह साची देवे माण, सचखण्ड मिल के खुशी वखाईआ। कलिजुग अन्त कर परवान, मेहरवान होया सहाईआ। जिस दवारे झुला के जाए सच निशान, तिसदा निशाना ना कोई मिटाईआ। चार जुग देंदे रहे बिआन, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग सोहला इक्क सुणाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र करे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत भरम विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। (२४ चेत श सं २ मुनशा सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत तेरी अन्तर याद, याद पूरब रही कराईआ। जिस कारन पंज तत्त खेड़ा होया आबाद, साढे तिन्न हत्थ वज्जी वधाईआ। शब्द अगम्मी सुण नाद, सुर ताल बदलाईआ। खुल्हे अंदरों राज़, पड़दा दए उठाईआ। झगड़ा मुक्क जाए सिमरन पूजा निमाज़, सीस इक्को इक्क झुकाईआ। किरपा करे आप महाराज, पुरख अकाला दीन दयाला बेपरवाहीआ। नवें जन्म दी साजण देवे साज, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। शब्द अगम्मे चाढ़ जहाज, दो जहानां पार लंघाईआ। माया ममता मेट के वाद विवाद, अमृत इक्को रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाईआ।

जन भगत तेरी उजल बुद्धि, मन विकार रहे ना राईआ। अन्तर आत्म आपे करे सुध्धी, अन्त पवित आप बणाईआ। रमज़ लाए शब्दी गुझी, सोई सुरती आप उठाईआ। खेल रहे कोई ना लुकी, पड़दा आप उठाईआ। अन्त अन्तश्करन विच्च रहे कोई ना दुखी, सुख सागर रूप समाईआ। उजल करे मात मुक्खी, मुफ़त आपणा रंग चढ़ाईआ। सचखण्ड दवारे गोदी फिरे चुक्की, दर घर साचे दए बहाईआ। लोकमात रोटी खा के सुक्की, सुक्के रुखड़े हरे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे कोलों सलाह नहीं कोई पुच्छणी, पुशत पनाह जन भगतां आपणा हत्थ टिकाईआ। (२४ चेत श सं २ तरलोक सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत तेरा ऊँच टिकाणा, टकयां वाला पहुंचण कोई ना पाईआ। जित्थे खड़े इक्को शब्द बबाना, ख़ाकी तन नज़र कोई ना आईआ। आत्म परमात्म गौंदी जाए गाणा, सोहँ ढोला सैहज सुभाईआ। अन्त पए ना पछोताणा, साचे दर ना होए जुदाईआ। मिले मेल श्री भगवाना, भगवन आपणे घर वसाईआ। चरन कँवल बख्शे सच ध्याना, दूजी ओट ना कोई तकाईआ। मन्दर सोहे सच मकाना, सचखण्ड वज्जदी रहे वधाईआ। लेखे लग्गे आवण जाणा, जानणहार होए सहाईआ। चले चलाए सदा आपणे भाणा, भावी भउ ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दवारे देवे इक्को माणा, मान अभिमान रहे ना राईआ।

जन भगत तेरी उच्ची चोटी, चोट सतिगुर शब्द आप लगाइंदा। जित्थे पहुंच

ना सकण कोटन कोटी, कूड़ कुटंब भेव कोई ना आइंदा। जिस गृह जगे इक्को निर्मल जोती, जागरत जोत डगमगाइंदा। उह मंज़ल तेरी होवे सौखी, अद्धविचकार ना कोई अटकाइंदा। पढ़नी पए कोई ना पोथी, पुस्तक हत्थ ना कोई फड़ाइंदा। किसे दवारिउँ भिखिअक हो के मंगणी पए ना रोटी, सच भंडारा आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महल्ल अट्टल इक्को इक्क सुहाइंदा।

जन भगत तेरा घर बहुरंगा, सिफ्ती सिफ्त ना कोई सलाहीआ। जिथ्थे सति सतिवादी डठ्ठा इक्क पलंघा, पावा चूल नज़र कोई ना आईआ। सतिगुर शब्द वजाए मरदंगा, तार सतार ना कोई हलाईआ। बिनां रसना तों आवे रस अनन्दा, रस्ता दिसे बेपरवाहीआ। अमृत धार वहे बिना गंगा, गहर गम्भीर आपणी दया कमाईआ। मन वासना दिसे कोई ना दंगा, क्रिया कूड़ ना कोई लड़ाईआ। सति पुरख निरञ्जण इक्क लहराए धुर दा झण्डा, ब्रह्मण्डां हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द अगम्मी फड़ के खण्डा, खण्डरां विच्चों जन भगतां पार कराईआ। (२४ चेत श सं २ सवरन सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत तेरा धुर दा ज़ामन, करता अबिनाशी इक्क अखवाइंदा। बिन हत्थां पकड़े दामन, दामनगीर पल्लू गंढ पवाइंदा। जगत अन्धेरा मेटे शामन, शाम हो के शमां आप जगाइंदा। मेला मिल्या रहे अगम्मी रामन, राम हो के रहबर दया कमाइंदा। जणौंदा रहे धुर दा नाम, नाम निधाना झोली पाइंदा। वखौंदा रहे सच्चा आराम, सिँघासण आसण इक्क वडिआइंदा। जणौंदा रहे धुर पैग़ाम, धुर दा धर्म इक्क दसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क वडिआइंदा।

जन भगत तेरा डाहढा ज़ोर, ज़ोरावर दए बणाईआ। आत्म परमात्म बज्झी रहे डोर, जगत जहान सके ना कोई तुड़ाईआ। झगड़ा मुक्कया रहे पंज चोर, ममता मोह ना कोई सताईआ। मन्दर लभ्भणा पए ना कोई होर, घट दवाले वज्जे वधाईआ। मनूआं मन ना पावे शोर, छोहरा बांका शब्दी आपणी लए अंगढ़ाईआ। सदा सदा सद रक्खे तेरी लोड़, अबिनाशी करता ध्यान लगाईआ। समें समें लए जोड़, मेला करे सैहज सुभाईआ। अन्त काल कलिजुग इकल्ला कदे ना जावे छोड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छुटकी लिव आप लगाईआ। (२५ चेत श सं २ लाल सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत वेखो सचखण्ड, धर्म दवारा इक्को सोभा पाइंदा। जिथ्थे ना कोई सूरज ना कोई चन्द, मण्डल मंडप ना कोई रुशनाइंदा। ना कोई ढोला गीत गावे छन्द, रागाँ ताल ना कोई अलाइंदा। ना कोई दर दरवेश भिख्खया रिहा मंग, जगत अलक्ख ना कोई जगाइंदा । ना कोई मन वासना दिसे अनन्द, बुद्धि बिबेक ना कोई बणाइंदा। ना कोई तीर्थ तट्टां वाला पन्ध, मन्दर मस्जिद शिवदवाला मट्ठ ना कोई प्रगटाइंदा। ना कोई अमृत धार दिसे गंग, जल वहण ना कोई वहाइंदा। ना कोई साक सज्जण सैण होवे संग, नार कन्त सेज ना कोई हंढाइंदा। ना कोई पूजा पाठ सिमरन जोग अभिआस मिलण दा ढंग, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चा टिल्ला पब्बत नज़र कोई ना आइंदा। ना कोई आवण जावण लक्ख चुरासी पावे फंद, शत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोई वंडाइंदा। ना कोई धरनी धरत धवल दिसे वरभंड, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ नाच ना कोई नचाइंदा। ना कोई क्रिया जूठ झूठ ममता दिसे गंद, सुगंध धार ना कोई बणाइंदा। ना कोई सेज सुहञ्जणी दिसे पलंघ, जगत आसण ना कोई विछाइंदा। ना कोई दूई द्वैत भरमां दिसे कंध, भाण्डा भरम ना कोई वडिआइंदा। इक्क इकल्ला एकँकारा बैठा सूरा सर्बंग, जोती जाता पुरख बिधाता नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। जन भगतां कोलों सच प्रीती प्रेम प्यार मुहब्बत रिहा मंग, दूजी आस ना कोई वखाइंदा। इक्को नाम संदेशा देवे सोहँ ढोला सुणाए छन्द, निरगुण निरगुण आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक्क वखाइंदा।

जन भगत वेख प्रभू दा देस, परदेसी हो के फेरा पाईआ। जिथ्थे वसे इक्क नरेश, नर नरायण डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी देवे संदेश, धुर फ़रमाणे हुक्म सुणाईआ। चरन झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, देवत सुर बैठे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करदे हेत, चरन धूढ़ी खाक रमाईआ। शब्दी गुर पुच्छदे भेत, पड़दा उहला रिहा उठाईआ । सन्त सुहेले तक्कदे नेत नेत, बिन अक्खां अक्ख मिलाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी कलिजुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां रुत्त बदल के चेत, चेतन्न सुरती सभ दी दए कराईआ । शब्दी धार अगम्मी लिखे लेख, लिखत भविख्त नाल वडयाईआ। जिन्हां पैहलों लिआ भेज, अन्तम सैहज लिआ मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रेम प्रीती अंदर लए पेख, रेख पिछली दए बदलाईआ । (२५ चेत श सं २ बीबी महंती दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत साची प्रभ दी प्रीत, आदि जुगादि जुग चौकड़ी लोकमात बणी आईआ। आत्म परमात्म साहिब सुहेला इक्को वसे चीत, चेतन्न सुरती अंदरों दए कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा सदा गौंदे रहणा गीत, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के खुशी मनाईआ। काया माटी तन वजूद होवे ठांडा सीत, अगनी तत्त मोह विकार ना कोई सताईआ। साचा कलमा धुर

दा नग़मा सुणदे रहण हदीस, हज़रत हो के हरि जू करे पढ़ाईआ। मन मनुआ निझ गृह बदल जावे नीत, बुद्ध बिबेक साची टेक दए समझाईआ। झगड़ा मुक्क जाए ऊँच नीच, राओ रंक हस्त कीट जात पात वरन बरन वंड ना कोई वंडाईआ। शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश अबिनाशी करता सभ दा मीत, द्वैत भावना विच्च कदे ना आईआ। सदा छत्तर झुलदा रहे जिस दे सीस, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सच दवारे निरगुण जोत सोभा पाईआ। नाम भंडारा हरि निरँकारा नित्त नवित्त भगतां करदा रहे बख़्शीश, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ।

जन भगत प्रभू दा सच्चा प्यार, बिन किरपा हत्थ किसे ना आइंदा। जुग चौकड़ी खेले खेल अगम्म अपार, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। सन्त सुहेले लए उठाल, गुर चेले रंग रंगाइंदा। दीआ बाती कमलापाती काया मन्दर अंदर देवे बाल, आदि निरञ्जण जोत निरञ्जण डगमगाइंदा। साढे तिन्न हत्थ वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को इक्क वडिआइंदा। जिस गृह मिले दीन दयाल, सो मन्दर सोभावन्त अखवाइंदा। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर दिवस रैण चले नाल, मन नालिश मेट मिटाइंदा। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, शहनशाह इक्को दर वखाइंदा। जन भगतां जुग जुग सुरत रिहा संभाल, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाइंदा। निरवैर हो के बणदा रिहा दलाल, निरँकार हो के आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे विच्च समाइंदा।

जन भगत आदि जुगादी प्रभ दा सच्चा नाता, दो जहान ना कोई तुड़ाईआ। मार्ग दस्से धुर दा साचा, मंज़ल मंज़ल राह विच्च ना कोई अटकाईआ। आत्म परमात्म दस्से गाथा, धुर दी करे सच पढ़ाईआ। जोती दा बण के जाता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। अन्तर मेट अन्धेरी राता, निरंतर नूर करे रुशनाईआ। गृह मन्दर वखाए साचा, दर घर ठांडे वज्जे वधाईआ। जिस गृह भगतां बणे राखा, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। प्यावणहारा अमृत बाटा, आबेहयात बूंद स्वांती मुख चवाईआ। सुहावणहारा आत्म सुहञ्जणी सेज खाटा, बिसतर ना कोई टिकाईआ। जन्म जन्म कर्म कर्म लक्ख चुरासी आवण जावण मेटणहारा वाटा, जम की फासी दए तुड़ाईआ। अन्तम मेल मिलाए पुरख समराथा, समरथ आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां वखाए इक्क घर, जित्थे अवर ना कोई साका, सज्जण साहिब सतिगुर इक्को नजरी आईआ। (२५ चेत श सं २ कौशलया देवी दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत निरगुण धार वेख प्रभ चरन, कँवल मिले सरनाईआ। दो जहानां बख़्शे सरन, सरनगत इक्को इक्क समझाईआ। साची मंज़ल होवे चढ़न, अग्गे हो

ना कोई अटकाईआ। धुर दा ढोला पैणा पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। झगड़ा चुक्क जाए जात पात वरन बरन, हिंसा वाली वंड ना कोई वंडाईआ। कलिजुग अगनी अग्ग ना पवे सड़न, अन्तर आत्म मेघ बरसाईआ। मरन विच्चों मिले मरन, जीवण विच्चों जीवण दए बदलाईआ। निझ नेत्र खुल्ला रहे हरन फरन, दर्शन देवे चाईं चाईंआ। करनी दा करता आप हारकरन, करता पुरख बेपरवाहीआ । सन्त सुहेले जुग जुग आवे फड़न, भगत भगवन्त विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि लए मिलाईआ।

जन भगत वेख प्रभू दा नूर, निरगुण जोत डगमगाईआ। सर्ब कला भरपूर, खाली भंडारे दए भराईआ। जन भगतां मिले ज़रूर, नित्त नवित्त वेस वटाईआ। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़, सति सच इक्क समझाईआ। लेखे ला के मूर्ख मूढ़, मुगधां दए वडयाईआ। बेड़े चाढ़ के आपणे पूर, जगत जहान पार कराईआ। साचे नाम दा दे सरूर, सुखसागर विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखावे इक्क घर, परम पुरख आत्म परमात्म भगत भगवान दर दवारा इक्को इक्क सुहाईआ। (२५ चेत श सं २ कंस राज दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत रहे ना औखी घाटी, आवण जावण लेखा दए मुकाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना अन्धेरी राती, नाम निधाना साचा चन्द चमकाईआ। दीन मज़ब झगड़ा रहे ना जात पाती, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोई वंडाईआ। आत्म परमात्म मेला होवे कमलापाती, पतिपरमेश्वर आपणा रंग दए रंगाईआ। नाम प्याला जाम देवे बण के धुर दा साकी, रस खुमारी इक्को इक्क चढ़ाईआ। प्रेम प्रीती मुहब्बत अंदर देवे सच्ची दाती, दाता दयावान आपणी दया कमाईआ। निझ गृह निझ मन्दर साचे घर निरगुण धार करे वासी, पुरख अबिनाशी सच दवारा इक्क सुहाईआ। अमृत बूंद अगम्म प्याए स्वांती, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। एथे ओथे दो जहानां जन भगतां बणया रहे धुर दा साथी, निरगुण निरवैर सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि लेखे लाईआ।

जन भगतां लेखा रहे ना मातलोक, जूनी जून ना कोई भवाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नर नरायण आत्म परमात्म दस्से इक्क सलोक, सोहँ ढोला सच सुणाईआ। घट भीतर गृह मन्दर होवे प्रकाश जोत, निर्मल नूर डगमगाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ करनी ना पए खोज, मन्दर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ गुरदवार ना कोई भवाईआ। कूड़ी क्रिया हउमे हंगता संसा मेटे चिन्ता सोग, हरख हवस ना कोई वधाईआ। चरन प्रीती धुर दी नीती मिले धुर दा जोग, जोगीशर रिखीशर मुनीशर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। भाग लग्गे काया माटी साचे कोट, किला बंक दवार इक्क सुहाईआ। शब्द नाद वज्जदी रहे

चोट, सोई सवाणी सुरती शब्द हाणी आप उठाईआ। भगत भगवान आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण निरगुण मिल के मानण मौज, सरगुण लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अगम्मी आप वरताईआ।

जन भगत सदा मिलदा रहे ओस, जो एक एकँकारा आपणा नाउँ धराईआ। निझ घर सद वस्सया रहे पड़ोस, मन्दर अंदर डेरा लाईआ। नाम खुमारी अंदर रक्खे सदा मदहोश, जगत प्याला मधर ना कोई प्याईआ। बुद्धि तों परे शब्दी धार दस्से सोच, जगत विद्या लोड़ रहे ना राईआ। जिस मंज़ल जगिआसू जीव ना सके पहुंच, जन भगत सुहेले सहजे बैठे डेरा लाईआ। झगड़ा मुक्क गिआ चौदां लोक, चौदां तबक ओट ना कोई रखवाईआ। इक्को ढोला गीत गौंदे तूं मेरा मैं तेरा सलोक, सोहला साहिब स्वामी अन्तर आप जणाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमे हंगता कट रोग, सच सुच्च संजम विच्च गए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत वखाए धुर दा घर, सचखण्ड दवारा एकँकारा निरगुण धारा जोती जाता जागरत जोत करे रुशनाईआ।

जन भगत तेरा दवारा धुर दा इक्क, अबिनाशी करते दिता बणाईआ। बिनां कलम शाही लेख दिता लिख, एथे ओथे दो जहान सके ना कोई मिटाईआ। नाम पर्दाथ अगम्मी पाए भिख, भिच्छया इक्को वार वरताईआ। सच दवारे जो बणया सिख शिश, सिध्धा आपणे नाल मिलाईआ । जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी पूरी करे पूरब इछ, इच्छया अंदर आसा दए भराईआ। पुरख अकाला दीन दयाला साख्यात निझ महल्ल अट्टल पए दिस, दह दिशा लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। जन भगतां संग आदि जुगादि सदा करे हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ । लोकमात औंदा रहे नवित्त, जोती जाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगत भगवान देवे जीआ दान, जीवण जुगता मुफ्त दरुसत दीन दयाल दए समझाईआ। (२६ चेत श सं २ जसवन्त सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगतां प्रभ आप बणदा, बंधनां विच्चों दए कढ्ढाईआ। गुरमुख सुहेले शब्दी धारों जणदा, आदि जुगादी बणे धन्न जणेंदी माईआ। लहणा देणा चुकाए पंज तत्त ख़ाकी माटी तन दा, वजूद महबूब करे सफ़ाईआ। झगड़ा मेट के अंदरों मन दा, पतित पुनीत दए बणाईआ । इक्को नाम अक्खर देवे धन्न धन्न धन्न दा, खुशीआं विच्च खुशी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ओनां दे बेड़े बंन्दा, जो पूरब जन्म विछड़े राह तकाईआ। (२६ चेत श सं २ बीबी ज्ञानो दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

भगत सुहेले जुग जुग लभ्भदा, लावारस रहण कोई ना पाईआ। मेला करे आपणे सबब्ब दा, सहज सुभाउ लए उठाईआ । हुक्में अंदर शब्दी धार सद्दा, सुनेहड़ा इक्क जणाईआ । कूड़ा नाता समझो जग दा, बिनां श्री भगवान लेखा ना कोई मुकाईआ। मन विकार अंदर सड़ना अग्ग दा, तृष्ना तृखा ना कोई बुझाईआ। जो साहिब सतिगुर सरनाई लगदा, सो मंज़ल चढ़ के सोभा पाईआ। जिथ्थे नाउँ निरँकारा डंका वजदा, दूजा राग ना कोई अलाईआ। झगड़ा मुक्के जगत जहान कूड़ी हद्द दा, दीन दुनी ना कोई लड़ाईआ। दर्शन होवे इक्को सूरे सर्बग्ग दा, सर्ब विआपी नज़री आईआ। विछोड़ा रहे ना अग्ग अलग्ग दा, पिछला पन्ध दए मुकाईआ । प्यार बणया रहे सच्चे जस दा, मुहब्बत विच्च ढोला गाईआ। इशारा मिल जाए ओस अक्ख दा, जो आखर इक्को घर टिकाईआ। जुग जुग जन भगतां पैज आपे रक्ख दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहणा मुका के जगत रूप कग्ग दा, हँस गुरमुख आप प्रगटाईआ। (२६ चेत श सं २ बीबी दुरगी दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगतां प्रभ सदा संग, आदि जुगादि जुग चौकड़ी धुर दा संग निभाइंदा। आत्म परमात्म चाढ़े अगम्मी रंग, शाह पातशाह शहनशाह आपणी दया कमाइंदा। नाम निधान श्री भगवान वजाए आपणा मरदंग, धुन आत्मक राग अनरागी आप सुणाइंदा। जगत दवारा वेखे पार लंघ, घर विच्च घर गृह विच्च गृह आप वडिआइंदा। जिथ्थे नाउँ निरँकारा वज्जे मरदंग, सुर ताल रूप ना कोई बदलाइंदा । होवे प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती जाता डगमगाइंदा। साचा अमृत देवे निजानंद, रस उमंग बेपरवाह आपणा भेव खुल्ह़ाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा ढोला दस्से के छन्द, सोहँ सति सरूप आप समझाइंदा। पड़दा रहे ना हँ ब्रह्म, पारब्रह्म प्रभ आपणे विच्च मिलाइंदा। सन्त सुहेला दूजी वार ना पए जम्म, लक्ख चुरासी गेड़ ना कोई भवाइंदा। धुर संजोगी मेला होवे नाल श्री भगवन, भगत भगवान इक्को घर सोभा पाइंदा। जिथ्थे झुल्ले सति सच इक्क निशान, निशाना अवर ना कोई वखाइंदा। बिन पढ़यां होवे ज्ञान, निरअक्खर धार प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन पड़दा आप उठाइंदा।

हरिजन मिले नाल जगदीश, जगदीश आपणे विच्च समाईआ । साचा नाम कलमा दस्से हक़ हदीस, हज़रत हो के करे पढ़ाईआ। अन्तर अन्तर मन वासना बदल देवे रीत, जगत विद्या दी लोड़ रहे ना राईआ। झगड़ा मुक जाए मन्दर मसीत, काया काअबा दए वखाईआ। जिथ्थे बैठा सदा अतीत, त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ। लेखा रहे ना हस्त कीट, ऊँच नीच राओ रंक ना कोई वखाईआ। आत्म परमात्म दस्से सच प्रीत, परम पुरख प्रभ आपणा भेव खुल्ह़ाईआ। जन भगतां साची मंज़ल चढ़ के वेखे ठीक, ठीकर कूड़ा भन्न वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लँघणहारा ओस दहलीज़, जिथ्थे जगत वासना रहण कोई ना पाईआ।

जन भगतां प्रभ देवणहारा जुगत, शब्दी शब्द भेव खुल्हाईआ। सच दवारे चढ़ी रहे सुरत, सुत्यां आलस निंदरा दए गवाईआ। नज़री आए अकाल मूरत, अकल कलधारी बेपरवाहीआ। जिस दा नाम अगम्मी साचा तूरत, तुरीआ पद तों आपणा अगला खेल वखाईआ। चतुर सुघड़ बणा के मूर्ख मूढ़त, सन्त सुहेले साचे दर दए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, नित नवित्त कर कर हित, पुरख अबिनाशी धुर दा पित, पतिपरमेश्वर पारब्रह्म ब्रह्म आपणे विच्च समाईआ।

(२६ चेत श सं २ तेज कौर दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगतां बख्शे अमृत सीर, धुर दा जाम इक्क पिलाईआ। मन कल्पणा आवे धीर, धाम राम दए जणाईआ। हउमे रहे ना कोई पीड़, सोग रोग दए गवाईआ। मानस जन्म बंन्हे बीड़, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। सचखण्ड दवारे भगतां दी कोई बहुती नहीं भीड़, कोटां विच्चों थोड़े बैठे सोभा पाईआ। जिन्हां दा उपदेशक इक्क कबीर, कामल मुशर्द नाल मिलाईआ। दरस करावे बेनज़ीर, नज़र नज़र विच्चों बदलाईआ। लहणा रहे ना कोई तत्त सरीर, शरअ छुरी ना कोई चलाईआ। जगत खड़ग ना कोई शमशीर, चिल्ला तीर ना कोई उठाईआ। किरपा करे दाता गहर गम्भीर, गुणवन्ता होए सहाईआ। जन भगतां चरन प्रीती दे के धीर, धीरज धरवास इक्क दृढ़ाईआ। सच दवारे रहे ना कोई ग़रीब, ग़रीब अमीर इक्को रंग दए वखाईआ। जो सोहँ ढोला गाए फ़िकरा सो हक़ फ़कीर, फ़क्कर हो के फ़कत जाती नाता जाए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अंदरों बदल देवे तासीर, बिन तसबी माला आत्म परमात्म नाम जपाईआ। (२६ चेत श सं २ चरन सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत तेरी रहे ना गिरयाज़ारी, ग्रिहा गृह वेख वखाईआ। चुरासी कट्टे जगत बेज़ारी, बेवा नाता दए तुड़ाईआ। किरपा करे अपर अपारी, अपरम्पर होवे आप सहाईआ। आत्म रहण ना देवे कवारी, परमात्म हो के आप परनाईआ। चरन कँवल सच प्रीत देवे आधारी, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जगत विछुंनिआं मेली जाए वारो वारी, वारता पिछली वेख वखाईआ। लेखा जाणे धुरदरबारी, पड़दा उहला दए उठाईआ। मेला मिले जोत निरँकारी, निरगुण आपणे विच्च समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मालक बण के धुर दरबारी, दरगाह साची साचे धाम धुर दा राम आराम नाल गुरमुख दए टिकाईआ।

(२६ चेत श सं २ तारा सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत प्रभ पावे सार, सार शब्द शब्द विच्च मिलाईआ । निझ नेत्र नैण देवे दीदार, बिन अक्खवां अक्खव प्रतक्खव खुल्लाईआ। अमृत रस निझर हकीकी जाम दए प्याल, मन वासना कूड़ी तृष्ना मेट मिटाईआ। काया मन्दर अंदर धुर दा काअबा वखाए सच्ची धर्मसाल, सच दवारा इक्को इक्क सुहाईआ। बिन तेल बाती जोती दीपक देवे बाल, दिवस रैण अठ्ठे पहर करे रुशनाईआ। निरगुण हो के सरगुण करे संभाल, रक्खक रक्खया करे थाउँ थाईंआ। आत्म परमात्म हो के वसे नाल, नालिश कूड़ ना कोई प्रगटाईआ। जन्म ज़िंदगी जीवण आपणी जुगती करे बहाल, गेड़े विच्च फेरे विच्च भरम ना कोई भुलाईआ। पूरब लहणा आसा मनसा पूरा करे सवाल, अहिवाल आपणा इक्क जणाईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला पारब्रह्म ब्रह्म वसे नाल, नालिश कूड़ी चले ना कोई चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत देवे प्रभ हक़ दीदार, नूर नूर विच्चों चमकाईआ। सोई सुरती करे बेदार, आलस गफ़लत ना कोई वडयाईआ। पड़दा लाह के दह दिशा कुण्ट चार, चार वरन अठारां बरन झगड़ा दए चुकाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी दस्से के इक्क प्यार, मुहब्बत महबूब नाल जणाईआ। कुदरत दा कादर करनी दा करता पावे सार, सर्ब विआपी आपणा रंग रंगाईआ। हरि सन्त सुहेले गुरू गुर चेले मेले विच्च संसार, संसारी हो के खुआरी दए गवाईआ। काया मन्दर अंदर वखाए धर्म दवार, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी पड़दा इक्क उठाईआ। नाद शब्द सुणाए सच्ची धुन धुनकार, अनहद नादी नाद अलाईआ। वेखे विगसे पावे सार, पड़दा उहला अंदरों दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ।

जन भगतां प्रभ दस्से एका टेक, टिक्का मस्तक नाम लगाईआ। अन्तर अन्तर करना बिबेक, सुरती सुरत शब्द विच्च समाईआ। कूड़ कुड़िआरा रहे कोई ना भेव, पारखण्ड रूप ना कोई बदलाईआ। परमात्म आत्म एकँकारा एक, एक मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ।

जन भगत दस्से एका ओट, ओड़क आपणे नाल मिलाईआ। गुरमुख तेरा सति सरूप सति निर्मल जोत, प्रकाश विच्चों प्रकाश करे रुशनाईआ। झगड़ा रिहा ना जात पात दीन मज़्ब वरन गोत, सतिगुर शब्द इक्को करे शनवाईआ। लहणा देणा चुक्के लोक परलोक, लेखा मंगण कोई ना आईआ। मन बुद्धि दी करे कोई ना सोच, बिन अनभव हमसाजण मिलण कोई ना पाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्तां वाले सलोक, अन्तर अन्तर बिन रसना होवे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ ।

जन भगत प्रभ पड़दा खोल्ले आप, आपणी दया कमाईआ । तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा सांझा जाप, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। मेरा नूर सदा पाक, पूत पवित सोभा पाईआ।

लभ्भयां कोई कर ना सके तलाश, खोजयां हत्थ किसे ना आईआ। काया मन्दर अंदर बण निरगुण धार जावां गवाच, भरम भुलावां सर्ब लोकाईआ। कूड़ कुड़िआरां लावां आंच, अगनी अग्ग तपाईआ। जन भगतां मेल मिला के कमलापात, पतिपरमेश्वर नाता दिआं जुड़ाईआ। साचे सन्तां धुर संदेशा जावां आख, आख़र इक्को हुक्म दृढ़ाईआ। मन वासना होइओ ना कोई गुस्ताख़, पंजां नाता जाणा तुड़ाईआ। मानुख मानव मानस एको जात, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच्च रक्खो इतफाक, इतमीनान आपणा नाम दए कराईआ। हत्थों सुट्टो ना कोई रबाब, अहबाब मिल के वज्जे वधाईआ। सुफने वाला नहीं खवाब, ख़ालस मिल के रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सभ नूं सजदा कलमा दस्से इक्क आदाब, आदत इबादत अंदरों दए बदलाईआ। (१० जेठ श सं २ अमरो देवी दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत आपणा तन वजूद वेख जुस्सा, नज़र विच्चों नज़र उठाईआ। आत्म परमात्म कदे ना रुसा, मन वासना सृष्ट दृष्ट हलकाईआ। सति सच करना नहीं कदे गुस्सा, गिले विच्च गुस्सा ना कोई पाईआ। सच दवार रहणा ना रुसा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। आत्म नूर रहे ना लुका, हरिजन वेख ख़ुशी मनाईआ। काया मन्दर अंदर तूं मेरा मैं तेरा पढ़ना इक्को तुका, जिस नाल तोहमत लग्गे ना कोई लोकाईआ। कर्म कर्म रहे ना दुखा, दलिद्दरां दए चुकाईआ। तन सरीर कर के सुच्चा, संजम इक्को दए समझाईआ। कलिजुग अन्तम पैंडा रिहा मुक्का, सतिजुग साचे वज्जे वधाईआ। जन भगतो श्री भगवान नाता शब्दी धार पिता पुत्ता, पतिपरमेश्वर आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर विंघ विष्नूं भगवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। (१० जेठ श सं २ सधरो देवी)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत तेरा सच्चा रस्ता, रहबर इक्को नज़री आईआ। बंन्णा पए कोई ना बस्ता, पुस्तक सीस ना कोई उठाईआ। सच भंडारा मिले ससता, बिन कीमत झोली पाईआ। सच मुहब्बत विच्च होणा वाबस्ता, आहिस्ता आहिस्ता देवणहार सरनाईआ। मानस जन्म लाहा खट्टणा साचे जस दा, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। नज़ारा तक्कणा निझ नेत्र अक्ख दा, दोए लोचन बन्द कराईआ। चंगा नहीं लग्गदा वसणा वक्ख दा, आत्म परमात्म काया मन्दर अंदर मिल के इक्को घर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा समझाईआ।

जन भगत तेरी आत्म श्रेष्ट सिफ्तां तों बाहर जात, वरनां दा वरन इक्को नज़री आईआ । सच प्रेम प्यार मुहब्बत दी तेरी जमात, अक्खरां विच्चों निरअक्खर तेरी अगम्म पढ़ाईआ। आत्मा कदे ना पाए वफात, मरन विच्च मर के आपणा आप ना कदे मिटाईआ । इस दी सिफ्त अक्खरां विच्च करे ना कोई लुगात, लायक नालायक भेव कोई ना पाईआ। जुग चौकड़ी आत्म परमात्म मेल हुंदा प्रभ किरपा इतफाक, परवरदिगार सांझा यार आपणा रंग वखाईआ। लहणा देणा पूरब लेखा कराए बेबाक, हिसाब किताब ना कोई वडयाईआ। सच प्रीती जोड़ के आपणा नात, नातवां तों नौजवान दए बणाईआ। बिन साहिब स्वामी अन्तरजामी सतिगुर पूरे दूसर कोलों सिक्खी किसे ना जाच, जगत मीत हक़ वतन ना कोई पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दस्सणहारा गाथ, गावणहारा गा गा खुशी मनाईआ।

जन भगत सति सति तेरा रूप मनुख मनुष, मुशकल रहे ना राईआ। मानव आए कोई ना दुःख, मंत्र आपणा दए दृढ़ाईआ। तृष्ना जगत रहे ना भुक्ख, ममता मोह विच्चों कढ्ढाईआ । साचे नाम दी दस्स के तुक, तूं मेरा मैं तेरा इक्को घर दए वखाईआ। अगला पैंडा जाए मुक्क, पिछला लेखा ना कोई प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ।

जन भगत तेरे हत्थ सच तौफीक, यकतरफ मिले वडयाईआ। तेरा रहे ना कोई फ़रीक, फ़िरके कूड़े देणे चुकाईआ । काया माटी करके अंदरों सीत, अगनी अग्ग बुझाईआ । चार वरन बणा के प्रीत, प्रीतम इक्को लैणा मनाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर कर के गए तस्दीक, शहादत शब्द हुक्म भुगताईआ। सच दवारे दा मालक बण वसनीक, वास्ता तुहाढे नाल जुड़ाईआ। सति सच दी इक्क उम्मीद, अमलां विच्चों अमल इक्को देणा जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद काया माटी सच गृह वसण वाला नज़दीक, दूर दुराडा सफ़र मुसाफ़र हो के आपे दए मुकाईआ। (१० जेठ श सं २ केसरी देवी)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत सद लेखे लग्गे जरम, जन्म जन्म मिले वडयाईआ। अबिनाशी करता करनेहार देवे आपणी सरन, सवरन कंचन गढ़ काया माटी सोभा पाईआ। इक्क प्रीती धुर दी नीती इष्ट पुरख अकाल चरन, दृष्टी दया नाल खुलाईआ। पूरब लेखा रहण ना देवे कोई कर्म, कामना कायनात विच्चों पूर कराईआ । नित्त नवित्त कौल इकरार पूरा करे प्रन, परमानंद निजानंद निझ गृह आप वखाईआ। झगड़ा चुका के जात पाती वरन बरन, आत्म ब्रह्म इक्क दृढ़ाईआ। जगत विकार शब्दी धार निरगुण निरँकार आवे लड़न, नाम खण्डा सच ब्रह्मण्डां इक्को इक्क उठाईआ। गुरमुख सन्त फ़कीर आपणे फ़िकरे नाल आवे फड़न, डोरी तन्द मुहब्बत नाल बंधाईआ। साची मंजल महिबूब हो के आवे चढ़न, चार दीवारी

जगत दुश्वारी शत्रु दुशमण अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मालक हो के तरनी तरन, जन भगतां तार भवसागर पार सच दरबार दवारा इक्को इक्क जणाईआ। (१० जेठ श सं २ बीबी बंती देवी)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगतां देवे प्रभ इक्को जोग, जुगती आपणी इक्क दृढ़ाईआ। बिन कपड़े रंगण तों बख्शे उह अगम्मी मौज, जिस दा माजरा गावे सर्ब लोकाईआ। याद अंदर याद देवे रोज़, रोज़यां तों बिनां रैहम विच्च मिले सच गुसाईआ। नाम भंडारा बख्श आपणी चोग, चुगली निन्दयां कूड़ी क्रिया तों लए बचाईआ। आत्म परमात्म मिलण दी दस्से साची होश, हवस हवास हमद आपणे लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे मेल मिलाईआ।

जन भगत तपीश्र होवे सति, तपदा हिरदा शांत कराईआ। इक्को नाम लए जप, अजपा जाप विच्च बदलाईआ। कोट जन्म दे मिटण पप, पत्रयां दी करनी पए ना कोई पढ़ाईआ। मालक मिले जगत वाला हक़, हिकमत नाल हुक्म दए समझाईआ। दयावान हो पुरख समरथ, समें नाल समां दए टकराईआ। जन भगत मेले नट्ठ नट्ठ, दीन दुनी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। सच दवारा खोल्ह के हट्ट, वस्त धुर दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाईआ।

हरि भगत वड्ड वड्डा रिखी, रेखा आपणी आप बदलाईआ। जिस दे पास नाम निधान धुर दी चिठ्ठी, बिन अक्खरां पढ़ के आपणी खुशी विच्च समाईआ। जिस दी सतर मजमून विच्च निक्की, कानूंन विच्च वड्डी नज़री आईआ। धार होवे तिक्खी, तृखा तृष्ना दए बुझाईआ। मेला मिल के नाल साची सिखी, साख्यात सिखावत वाला प्रभ दा दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बदल देवे सम्मत वाली मित्ती, मित्र मताहत ना किसे रखाईआ।

जन भगत प्रेम प्यार दा वड्डा रसीआ, रस विच्च रस समाईआ। नैणां विच्चों नैण नेत्रां विच्चों नेत्र अक्खां विच्चों अक्खीआं, आख़र इक्को नाल मिलाईआ। जिस मुहब्बत प्यार नूं जुगाँ परवान लभ्भदीआं रहीआं सखीआं, सो मेहरवान हो के भगतां अंदर दए टिकाईआ। सच प्यार दीआं रसमां चसमां अंदरों कर के पक्कीआं, जिस्म विच्चों इसम गंढ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, कूड़ कुड़िआरयां रहण ना देवे हिस्से वाली पत्तीआं, पतिपरमेश्वर हो के इक्को हुक्म दए वरताईआ। (१० जेठ श सं २ अमरो देवी)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगतां प्रभ देवे अनन्द, अनन दया कमाईआ । धुर दा नाम सुणा के सच्चा छन्द, सहिंसा रोग दए मिटाईआ। आत्म परमात्म पा गंढ, नाता धुर दा लए जुड़ाईआ। अंदर बाहर हो के संग, सगला संग निभाईआ। सच प्रकाश चाढ़ के चन्द, अबिनाशी करता वेख वखाईआ । आवण जावण चुका के पन्ध, मुसाफर काफर रहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

जन भगतां सुहाए सुहावणी रुत्त, सोभावन्त सुहाईआ। नाम भंडारा दे के सभ कुछ, किशती नईआ नौका नाम चढ़ाईआ। मेहरवान हो के जन्म कर्म दा लेखा लए पुछ, धर्म दी धार इक्क समझाईआ। जगत क्रिया मेटे दुःख, दुखड़ा दर्द वाला गवाईआ । साचे नाम दा देवे सुख, सोहँ ढोला इक्क सुणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां भगती अंदर गोदी लए चुक्क, शक्ती अंदर शहनशाह दए वडयाईआ। (११ जेठ श सं २ जीवण सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगतां सद मनसा पूरी, मानस जन्म मिले वडयाईआ । पुरख अकाल दीन दयाल किरपा करे ज़रूरी, ज़ाहर हो के बातन पड़दा लाहीआ। लक्ख चुरासी आवण जावण कट्टे मजबूरी, मज़दूरी नाम दी झोली पाईआ। जल्वा बख़्श के इक्को नूरी, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। चरन कँवल सरनाई बख़्शे धूढ़ी, हाज़र हो के मेला मेले सैहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडा इक्क वखाईआ। जन भगत आत्म परमात्म रक्खदा रहे मिलाप, विछोड़ा विच्च ना कोई रखाईआ।

धुर फ़रमाणे सुणदा रहे बात, शब्द अनाद धुन शनवाईआ। दीन मज़्हब विच्चों बणया रहे आज़ाद, पाबन्दी जगत ना कोई लगाईआ। बिना साधनां तों सच दवार ना बणया रहे साध, सिदक हरि चरन इक्क सरनाईआ। साचा खेड़ा करदा रहे आबाद, इबादत इक्को अव्वल अल्ह़ा नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खोल्ह़दा रहे अन्तर राज़, रहमत नाल पड़दा आप उठाईआ।

जन भगत आलस विच्च कदे ना आवे निंदरा, गफ़लत विच्च गाफ़ल ना कोई बणाईआ । लभ्भणा पए ना गोकल बिन्दरा, बन बन ना फेरा पाईआ। साड़ना पए ना तन माटी पिंजरा, पिंजर ख़ाक ना कोई रमाईआ। मनौणा पए ना गणपत गणेश इन्दरा, सुरपत सीस ना कोई निवाईआ। जगत जगिआसूआं कोलों खुल्ह़ौणा पए ना जिंदरा, कुफल बन्द ना कोई कराईआ। मन बुद्धि अंदर सोचनी पए कोई ना बिधना, इशारा रमज़ ना कोई लगाईआ। धुर दा लेखा पुरख अकाल सभ दा देवे जितना, पूरब लहणा वेख वखाईआ। सच दवारे बण के इक्को पितना, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लेखा हुक्मे अंदर लिखना, कलम शाही कागज़ वंड ना कोई वंडाईआ। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख हरिजन हरिभगत प्रेम प्रीती अंदर जितना, जीवत जी जागरत जोत विच्च समाईआ। (११ जेठ श सं २ बसन्ती देवी दे घर)

★ ★ ★ ★ ★

★ ★ ★ ★ ★

जन भगत तेरा सति सरूप, तत्तां पड़दा उहला आप रखाईआ। तेरा मालक दाता दानी एका शाहो भूप, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी एका रंग एका रूप, रेख भेख इक्को इक्क वखाईआ। इक्को गृह घर घराना लेखा चार कूट, दह दिशा मिले वडयाईआ। इक्को नूर जोती दीपक जागरत रूप जगे महाना, सति सतिवाद नज़री आईआ। इक्को नाम शब्द धुन धुर दा गाणा, गावत गा गा खुशी मनाईआ। एका पुरख एका भगवन्त एका श्री भगवाना, भगवन देवणहार वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन हरि आपणे विच्च टिकाईआ।

जन भगत तेरी महिंमा अकथ्थ, शास्त्र सिमरत वेद पुरान कहण कोई ना पाईआ। तेरा मालक दाता सच स्वामी समरथ, पुरख अकाल दीन दयाल बेपरवाहीआ। जो सदा सदा नित्त नवित्त आत्म परमात्म सांझा रक्खे जस, हिस्से वाली वंड ना कोई वंडाईआ। निरगुण हो के सरगुण मिलदा रहे हस्स हस्स, हसती मसती नाम खुमारी धुर दी इक्क चढ़ाईआ। प्यार अंदर कर के वस, महबूब हो के महव आपणा रंग रंगाईआ। इशारे अन्तर निरंतर निझ नेत्र खोल्ले अक्ख, प्रतक्ख रूप नज़र आए गोसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा नाअरा बोल इक्क अलक्ख, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह देवणहार वडयाईआ।

जन भगत तेरा मन्दर सुहेला, साहिब स्वामी अन्तरजामी आप मनाईआ। जिथ्थे वसे एका एकँकार अकेला, अकल कलधारी सोभा पाईआ। सिध्धा भगतां करदा रहे मेला, चुरासी वंड ना कोई वंडाईआ। बणया रहे सज्जण सुहेला, धुर दा संगी बहुरंगी फेरा पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग सुहावणहारा वेला, दर दरबार दर आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सज्जण शहनशाहीआ।

जन भगत तेरा महल्ल अट्टल उच्च मुनार, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। दीआ बाती जगे अगम्म अपार, निरगुण नूर होवे रुशनाईआ। शब्द नाद वज्जे धुनकार, धुर दा राग अलाईआ। साची सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द सुणाईआ। झगड़ा मुक्के पुरख नार, नार कन्त इक्को रंग वटाईआ। साचा दर सोहे बंक दवार दर दरबार वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग हिस्सा पूरब इच्छा हरिजन झोली पाईआ। (११ जेठ श सं २ ईशर सिँघ के गृह)

★ ★ ★ ★ ★

★ ★ ★ ★ ★

जन भगत तेरा राह तक्कण चौदां लोक, ब्रह्मण्ड खण्ड राह तकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सुणन इक्क सलोक, सोहँ ढोला चाईं चाईंआ। प्रकाश तक्कण निर्मल जोत, विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख खुलाईआ। साध सन्त फ़कीर मानण मौज, मजलस वेख बेपरवाहीआ। आपणी आप मिटा के सोच, समझ विच्चों समझ गए गवाईआ। जन भगत तक्कण बिना तकल्लफ मिली मौज, मुकम्मल आपणा रंग चढ़ाईआ। जंगलां करनी पए ना खोज, टिल्ले पर्बत कोई ना फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा दए वखाईआ ।

जन भगत तेरा निराला गृह, गृहस्ती मिले माण वडयाईआ। जिस घर स्वामी रहे, पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। सच भंडारा अमृत दए, दाता दानी झोली पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला कहे, कह कह आपणी खुशी मनाईआ। सच प्यार वगा के नै, नईआ नौका नाम चढ़ाईआ। निरगुण वस्त अमोलक दे के शै, शहनशाह आपणा घर समझाईआ । जिथ्थे गुरमुख सज्जण बैह, बहश्त स्वर्ग दोवें सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

जन भगत तेरा घर सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाईआ। दीपक जोत जगे निरञ्जणा, नूर जहूर करे रुशनाईआ। साहिब सतिगुर दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। दरगाह साची बणे सज्जणा, सगला संग रखाईआ। नेत्र लोचण नैण पावे कजला, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चरन धूड़ कराए मज़ना, दुरमत मैल धुआईआ। साची दस्से धुर दी बन्दना, बन्दगी सीस जगदीस वखाईआ। आत्म दे के परमानंदना, निझानंद करे रसाईआ। दूजा दर पए ना मंगना, सच भंडारा झोली देवे पाईआ। भाग लगाए काया बंगला, मंगलाचार इक्को इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल साहिब मिले रंगला, रंग रतड़ा वेख वखाईआ। जिस दी एथे ओथे कोई ना वंडना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत तेरी मंज़ल हक़, धुर दे हुक्म नाल बणाईआ। जिथ्थे रहे कोई ना शक़, शकाइत कर ना कोई सुणाईआ। अगनी तपे कोई ना मट्ठ, कूड़ी वज्जे ना कोई वधाईआ। तीर्थ दिसे ना अठ्ठ सठ्ठ, जगत धार ना कोई जणाईआ। वणजारा बहे कोई ना हट्ट, हट्टो हट्ट ना कोई फिराईआ। इक्को मेला पुरख समरथ, जो सभ दा पिता माईआ। निझ नेत्र खोले अक्ख, बाहरों करे ना कोई पढ़ाईआ । प्यार मुहब्बत विच्च कर के वस, वसल यार दए समझाईआ । नाता जोड़ के धुर दा सच, सति सतिवादी मेल मिलाईआ। मार्ग महबूब हो के देवे दस्स, दहि दिशा पन्ध चुकाईआ। जन भगतां साचा दस्स के आपणा जस, ढोला इक्को इक्क सुणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विछोड़ा रहण ना देवे वक्ख, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। (११ जेठ श सं २ परताप सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत तेरा झगड़ा रहे ना पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल ना कोई लड़ाईआ। मण्डल रहे कोई ना रास, गोपी काहन ना कोई नचाईआ। सुरती होवे किसे ना दास, सेवक सेव ना कोई कमाईआ। मनूआं मन ना करे घात, दाओ चले ना कोई चतुराईआ। जगत आए ना अन्धेरी रात, कूड़ अन्धेर ना कोई छुपाईआ। इक्को मेला मिले पुरख समराथ, जो बख्शणहार बेपरवाहीआ। पूरा कर भविख्त वाक, वाक्फकार अगला लए बणाईआ । दुरमत मैल अंदरों काट, बाहरों ब्रह्म करे सफ़ाईआ। जन्म जन्म दी मेटे वाट, डंका धुर दा रंग चढ़ाईआ। सदा सुहेला वसे साथ, सगला संग निभाईआ। मालक हो के कमलापात, पतिपरमेश्वर हो के वेख वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी दस्स के इक्को जात, जेर जबर दी करे ना कोई पढ़ाईआ। सच प्रीती जोड़ के नात, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सुहेला वसे पास, पासा दुनी वाला उलटाईआ ।

जन भगत तेरी कोई ना जाणे हद्द, हदूद समझ कोई ना पाईआ। तेरा नूर पुरख अकाल दी यद, पिता पूत रीती चली आईआ। जुग चौकड़ी हुक्म अंदर लवे सद, हुक्मे अंदर हुक्म मनाईआ। आपणी धारों लए कढ्ढ, पंज तत्त नाता मानव जाती लए बणाईआ। लोकमात रहण ना देवे अड्ड, निरगुण हो के सरगुण वेख वख। अंदर वड़ के दस्से धुर दा छन्द, छन्द इक्को इक्क सुणाईआ । सच प्रेम दा दे के अनन्द, चन्द नूर करे रुशनाईआ। लेखा चुका के बन्द बन्द, बन्दगी इक्को दए दृढ़ाईआ। भगत सुहेला इक्क अकेला वाहो दाही मारे पन्ध, वेखणहार थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म सदा बख्शंद, तत्तां दा लेखा लेखे विच्च लेखे लए लगाईआ। (११ जेठ श सं २ प्रकाश सिँघ दे घर)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत सुहञ्जणी सुहावणी साची झुग्गी, अंदरां विच्चों अंदर मन्दरां विच्चों मन्दर सोभा पाईआ । जिथ्थे प्रभ दा वसेरा हुंदा बाहर जुगीं, जुग जुग देवे माण वडयाईआ। जिस दी विचार करे कोई ना बुद्धि, मन मन्नण कोई ना पाईआ। रमज़ इशारा सैनत लावे गुज्झी, हलूणा हिरदे विच्च प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर ठांडा इक्क दरसाईआ ।

जन भगत झुगी जग जगदीश, मिले माण वडयाईआ। आत्म परमात्म जिथ्थे मेला होवे बिनां धड़ सीस, तिन्हां अंदर वड़ के खुशी मनाईआ। साचा हुक्म मन्न इक्क हकीस, हद्दां तों परे झगड़ा वरनां वाला मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पूरी करे उडीक, आसा मनसा पूर कराईआ।

जन भगत लेखा जाणे आपणे निहुं दा, नव नौं चार वंड ना कोई वंडाईआ। रस माणे अगम्मी मेउँ दा, मेघ अमृत रूप बदलाईआ। झगड़ा रहे ना तूं मैं क्यों दा, कामल मुर्शद मिल के वज्जे वधाईआ। खेल वेखे अलख अभेउ दा, पड़दा उहला दए चुकाईआ। घराना वेखे धुर दे देउ दा, देवत सुर जिस दा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां नाता जोड़ के पिता पूत पिओ दा, पीआ प्रीतम हो के गोद उठाईआ ।

जन भगत सदा रहे खुशहाल, खुशी ग़मी ना कोई वखवाईआ । मन्नदा रहे एका दीन दयाल, जो दया विच्च दान झोली पाईआ। बणौंदा रहे भगत सुहेले साचे लाल, लाल गुलाला आपणा रंग चढ़ाईआ। करदा रहे एथे ओथे सदा संभाल, दूसर हत्थ ना दए फड़ाईआ । झगड़ा मुकौंदा रहे शाह कंगाल, ऊँचां नीचां इक्को घर टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत सुहेले साचे भाल, भार सभ दा दए चुकाईआ। (१२ जेठ श सं २ लाल चन्द दे घर)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत चुक्के अन्तर पड़दा, पर्दानशीन दया कमाईआ। उहला मिटाए आपणे घर दा, गृह विच्चों गृह लए प्रगटाईआ। इशनान कराए साचे सर दा, सरोवर इक्को इक्क वखवाईआ। रूप दरसाए अगम्मी हरि दा, जो हर घट डेरा लाईआ । भेव खुल्हाए घर थिर दा, जिथ्थे गुरमुख बह के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

जन भगत थिर घर सदा ना रक्खे आसण, आस आपणी आप वधाईआ। तक्के राह पुरख अबिनाशण, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। जिस दा सच दवार सिँघासण, स्वामी हो के सोभा पाईआ। निरगुण जोत जोत प्रकाशण, रव सस ना कोई वडयाईआ। घड़ी पल दिवस रातण, मास बरख ना वंड वंडाईआ । शाहो भूप जगत ना कोई राजण, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। जगत वणजारा वक्त ना कोई महाजन, हट्टो हट्ट ना कोई भवाईआ । नाद धुन शब्द ना कोई आवाज़न, ताल तलवाड़ा ना कोई खड़काईआ। गुर अवतार पैगम्बर पुस्तक कोई ना वाचन, शास्त्र सिमरत वेद पुरान अंजील कुरान ना कोई पढ़ाईआ। करे खेल सर्ब गुणतासण, गुण करता नूर खुदाईआ। जल्वा ज़ाहर कर बातन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत थिर घर अग्गे जावे वध, बिन कदमां कदम उठाईआ।

पुरख अकाल सैहजे लए सद्द, सदमा पिछला दए चुकाईआ । सच दवारा वखाए हद्द, हदूद पिछली दए मिटाईआ। विष्नूं धार बणा के आपणी यद्द, यदप आपणे रंग रंगाईआ ।

बिन तत्तां हो जाण संग, वजूद ख़ाक माटी तत्त नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा मनसा पूरी करे मंग, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत सचखण्ड दवारा वेख इक्क प्रकाश, प्रकाश विच्च समाईआ। ना कोई बचन ना बिलास, अनभव अन्तर राग अलाईआ। ना सेवक ना दास, खालस हो के मालक विच्च समाईआ। ना मण्डल ना रास, गोपी काहन ना सूरत बदलाईआ। ना सीआ ना राम ना जंगल बनबास, समुंद सागर ना कोई फोल फुलाईआ। ना हज़रत ना रूह पाक, ना अलफ ये पढ़े लुगात, कलमा हक़ ना कोई जणाईआ। सच दवारे खोल्ह के ताक, कर प्रकाश बिन आफताब, सच रुबाब अहिबाब हो के आपणी इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले कर के आज़ाद, दर घर ठांडे दए टिकाईआ।

दर घर दस्से इक्को ठंडा, चरन कँवल मिले सरनाईआ। जिथ्थे बन्दगी करे कोई ना बन्दा, रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोई हलाईआ। ना कोई ढोला ना कोई छन्दा, गीत राग ना कोई सुणाईआ। ना कोई सुखसागर अनन्दा, सदा अनन्द चित ना कोई वडयाईआ। ना कोई हँ ना कोई ब्रह्मा, ना कोई धर्म ना धर्मा, धरनी धौल ना कोई वखाईआ। ना कोई जीवण ना कोई मरना, ना कोई नेत्र खुल्हे हरना फरना, ना कोई गुरू अवतार पैगम्बर देवे सरना, सरनगत नज़र कोई ना आईआ। ना कोई मंज़ल पौड़ी डण्डा चढ़ना, ना कोई विद्या अक्खर पढ़ना, ना कोई तत्तां वाला लड़ फड़ना, जिस दे नालों होए जुदाईआ। पुरख अबिनाशी जोत प्रकाशी शाहो शाबाशी इक्क परमात्मा वरना, जो वरनां बरनां खैहड़ा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

जन भगत मंज़ल चढ़े अनोखी, जगत जुग नज़र कोई ना आईआ। जिथ्थे पढ़नी पए ना कोई पोथी, बगल कुरान ना कोई टिकाईआ। दरवेश हो के मंगणी पए ना रोटी, भिच्छया अलख ना कोई वखाईआ। बिरध बाल हो के फड़नी पए ना सोटी, कदमां नाल चले ना वाहो दाहीआ। इक्को नूर निर्मल सच प्रकाश हो के जोती, जोती जोत विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जेहड़ी मंज़ल दिती रविदास चुमारे मोची, मौजूदा हो के आपणे विच्च समाईआ।

जन भगत सचखण्ड दवारे चढ़े आप, आपणा आप बदलाईआ। इक्को पुरख अकाल मिल के बाप, सच सिँघासण सोभा पाईआ। लोकमात फेर कदे ना लवे झाक, लक्ख चुरासी नाता ना कोई जुड़ाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा सदा सद वसे ओस दे पास, जिस दा पासा ना कोई बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि भगत सुहेले निरगुण नूर जोत जोड़े नात, तत्तां वाली वंड ना कोई वंडाईआ। (१२ जेठ श सं २ गुरनाम सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत प्रभ पूरी करे सध्धर, सदा सदा सद आपणा रंग वखाइंदा। लोकमात निरगुण धार सरगुण करे कदर, कुदरत दा कादर वेख वखाइंदा। अमृत रस नाम प्याला देवे मधुर, मदि प्यास ना कोई जणाइंदा। जीवण जुगती देवे बदल, बदी नेकी विच्च वटाइंदा। पूर करा के मज़ल, मंज़ल आपणी इक्क समझाइंदा। सच तराजू तोल के वज़न, झूठ सच फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताइंदा।

जन भगत जागरत जोत, शमा शमशान भूमी ना कोई समझाईआ। सदा प्रकाश हुंदा रहे साचे कोट, कुटीआ विच्चों कूड़ कुटंब बाहर कढ्ढाईआ। सुणदा रहे सदा धुर सलोक, सोहला अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। बैठा रहे घराणे वाले चौक, चार कुण्ट जिस दा रस्ता इक्को सोभा पाईआ। परम पुरख दा पूरा करदा रहे शौक, शाकर हो के सद सद सीस निवाईआ। साची मंज़ल जाए पहुंच, दर घर साचे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ।

जन भगत कोई ना रहे तृखा, तृखा जगत ना कोई सताईआ। पुरख अबिनाशी पावे भिच्छा, भिक्खक झोली दए भराईआ। मन बुद्धि पूरी करे इच्छा, निरइच्छत हो के दया कमाईआ। रूप बणा के साचे सिखा, सिख्या धुर दी इक्क दृढ़ाईआ। जन्म जन्म दी मेट के विक्खा, अमृत फल दए खुआईआ। सच संदेश देवे चिट्ठा, कलम शाही ना कोई बणाईआ। धार वखाए इक्क अनडिट्ठा, जिथ्थे वसे बेपरवाहीआ। जन भगतां दए कदी ना पिच्छा, सनमुख हो के गले लगाईआ। जुग चौकड़ी जगत नेत्र किसे ना दिशा, बिन भगतां लोचन अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। बिन प्रेम प्यार किते ना विका, खाली हत्थ देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत दूजे घर ना बणन गाहक, वस्त लैण कोई ना जाईआ। कदे होर बणे ना राहक, हिसेदार ना कोई जणाईआ। सिध्धा पुरख अकाल बणावे साक, सज्जण सैण इक्क अखवाईआ। सैहज नाल खुल्हावे अंदरों ताक, पड़दा उहला परे हटाईआ। किसे हीर दा बणे कदे ना चाक, चाक दी हीर बण के आपणी सेव कमाईआ। मंगदा रहे इक्को धुर दी दात, जो दातार बिन तम्हा रिहा वरताईआ। आत्म परमात्म मिलण दा बणया रहे इतफाक, विछोड़े विच्च ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत सदा लावे इक्को नाअरा, नर हो के नरायण ध्याईआ। प्रेम प्यार दा हक़ जैकारा, जै जै कार विच्च समाईआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना छड्ड के दाइरा, दामन फड़ के खुशी मनाईआ। रमज़ वाला समझ के इक्क इशारा, बहुती करे ना कोई पढ़ाईआ। पार होवे दूर किनारा, मंज़ल नेड़े लए मुकाईआ। घर सज्जण मिले मीत मुरारा, ठाकर हो के दरस दिखाईआ। हकीकत विच्चों हक़ लै लए सारा, मुजारा हो के दूजा हिसा ना

कोई जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत आपणे विच्च समाईआ। (१३ जेठ श सं २ सरदारा सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत विरला विच्चों पदमां, पद साचा वेख खुशी मनाईआ। दूसर चुक्के ना कदमां, कदीम दी रीती प्रभ नूं सीस झुकाईआ। धर्म राए दी अदालत भुगते ना मुकद्दमा, सच मुकाम जाए चाईं चाईंआ। लक्ख चुरासी भरमण दा रहे कोई ना सदमा, दुःख दर्द ना कोई सताईआ। झगड़ा रहे ना पंज तत्त काया माटी बदना, बदला अगला दए मुकाईआ । मनुआ रहे ना कोई पगला, सोई सुरत सुरत उठाईआ। भटकणा पए ना विच्च जंगलां, जूह कंदरां ना खोज खुजाईआ। भीड़ी गली पए ना लँघणा, मन्दर साचे दए टिकाईआ। मंगतयां कोलों पए ना मंगणा, दवारा इक्को मंगे शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन दस्स के साची बन्दना, बन्दीखाने विच्चों बाहर कढ्ढाईआ।

जन भगत दूजे घर ना करे अर्ज़, आरज़ू अवर ना कोई जणाईआ। पुरख अकाल पूरा करे फ़र्ज़, मेहरवान हो के दया कमाईआ। दुखीआं दी दुःख विच्चों वंडे दर्द, दीन दयाल हो के वेख वखाईआ। पूरब जन्म दी फोल के फरद, फरमांबरदारां आपणी गोद उठाईआ । जगत वासना लग्गण ना देवे वरग, वाहिद कलमा इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच असचरज, अचरज लीला आप वरताईआ।

जन भगत किसे ना होवे अद्धीन, भय भउ ना कोई मनाईआ। इक्को पुरख अकाल लए चीन, हिरदे हरि हरि आप वसाईआ। मार्ग चढ़ के जगत महीन, पैंडा अगला लए मुकाईआ । श्री भगवान करे तसलीम, तसबी माला गलों सुटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सांझा दे यकीन, यक हुक्म इक्क सुणाईआ। बिना मुशर्द तों दस्से ना कोई तालीम, मुरीद मुरदा ना कोई उठाईआ । गुरमुख रहे ना कोई ग़मगीन, गुस्सा गिला देवे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे साचा वर, झगड़ा रहे ना नर मदीन, आत्म रूप सति सरूप सभ दा इक्को नज़री आईआ। (१३ जेठ श सं २ जोगिंदर सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगतां होवे ना कदे हैरानी, पसचाताप ना कोई रखाईआ। मन करे ना कोई शैतानी, शरअ जंजीर ना कोई बंधाईआ। मंज़ल वेखे सच असानी, अहिसान विच्च किसे ना आईआ । जूह जाणे ना कोई बेगानी, हर घट रमया वेखे धुर दा माहीआ। झगड़ा रहे ना बुत्तखानी, ख़ालस रंग विच्च समाईआ। किसे तों मंज़ल पुच्छणी पए ना रुहानी,

पौड़े डण्डे हत्थ ना कोई टकाईआ। किसे उधार ना होए प्रानी, जगत रीत ना कोई वखाईआ। इक्को तक्के सच निशानी, जिस दा निशाना झुल्ले थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, झगड़ा चुकावणहारा जन्म कर्म दीवानी, दाअवा दाइर फिर ना कोई कराईआ ।

जन भगत माया ममता करे कोई ना सोच, ग़म विच्च ना कदे समाईआ। इक्को दर्शन रिहा लोच, लोचा मनसा पूर मिले वडयाईआ। घर विच्च ठाकर करे खोज, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। सतिगुर सरन चरन साची मौज, मज़ा अंदरों दए चरवाईआ। बिना कपड़े रंगिउँ देवे जोग, जुगती आपणा नाम समझाईआ। दर्शन देवे रोज़, रोज़यां तों लवे बचाईआ। विकारां तों लवे रोक, हंगता दए मिटाईआ। सुणा के इक्क सलोक, सूखम मेला सहज सुभाईआ। गुआ के चिन्ता सोग, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला धुर संजोग, जग विछड़यां जोड़ जुड़ाईआ।

जन भगत देवे ना किसे खराज, जज़ीआ डंन भरन कोई ना आईआ। दूसर होवे ना किसे मुहताज, आसा विच्च ना नीर वहाईआ । साहिब सतिगुर पूरा करे काज, करनी दा मालक होए सहाईआ। शब्दी बेड़े चाढ़ जहाज, जगत जहान पार लंघाईआ। पूरब कर्मां दा बदल रिवाज़, रवादारी पिछली दए चुकाईआ। साचा दस्स के इक्क अदाब, सिख्या सिख सिख दृढ़ाईआ। धुन आत्मक सच्ची निकले आवाज़, सोहँ ढोला सहज सुभाईआ। कोटां विच्चों खोल्ह के राज़, हरिजन साचा आप जगाईआ। दुरमत मैल धोवे दाग़, दगेबाज़ी तों लवे बचाईआ । जोती दीप जगा चराग, चारागाहां विच्च ना कोई फिराईआ। भगत भगवान दस्स समाज, समग्री इक्को झोली पाईआ । धुर दा खेड़ा कर आबाद, इबादत आपणी दए सुणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन माटी ख़ाकी साची देवे पोशाक, पोशीदा आपणा आप रिहा ढुकाईआ।

जन भगत सद रक्खे हत्थ पुशत, पनाह इक्को इक्क जणाईआ। हुक्म नाम देवे दरुस्त, कूड़ी वंड ना कोई वंडाईआ। नाम भंडारा वंडे मुफ़त, कीमत करता ना कोई लगाईआ । वासा होवे ना फेर उलट, गरभ जून ना फेर भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

जन भगत कदे ना होवे मुरदा, मुरीद मुर्शद विच्च समाईआ। आदि जुगादि लहणा देणा साचे सतिगुर दा, सति सतिवादी धार चली आईआ। जो सच प्रेम अंदर जुड़दा, जोड़ी आपणी लए बणाईआ। राग सुणा के शब्दी ताल सुर दा, सुत्यां लए उठाईआ । झगड़ा मुका के अन्ध घोर दा, घराना साचा दए वसाईआ। झगड़ा चुका के ठग्ग चोर दा, चुरसते सारे साफ़ कराईआ। दर्शन देवे आपणी लोड़ दा, लोक परलोक वेख वखाईआ । पैंडा मुकावे काया मन्दर अंदर आपणे कोल दा, कुल्ल मालक आपणी दया कमाईआ। सच दरवाज़ा इक्को खोल्हदा, जन भगतां दए समझाईआ। गुरमुखां

कुकर्म कदे ना फोल दा, जगत कर्मां दी करे सफ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द कंडे तराज़ू साचे तोलदा, धड़ी वट्टे सेर नाल ना कोई रखाईआ। (१३ जेठ श सं २ माई लछमी दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत बदले कदे ना मनसा, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। सोहँ रूप बणया रहे हँसा, चतुरमुख साचा ढोला गाईआ। नाता तुटे जगत विकार बंसा, अंदर दे बंधू बन्दन कोई ना पाईआ। मनुआ हँकारी रहे ना कंसा, कूड़ा गढ़ दए तुड़ाईआ । जन्म मरन चुक्के संसा, गेड़ चुरासी ना कोई भवाईआ। दूई द्वैत रहे ना हिँसा, इक्को रंग वेखे सर्ब लोकाईआ। जुग चौकड़ी हुक्मे अंदर बिनसा, अबिनाशी आपणी खेल खिलाईआ। बिन भगतां झगड़ा किसे ना चुक्कया जूह पिण्ड दा, ब्रह्मण्ड खण्ड पन्ध ना कोई मुकाईआ। जगत जहान सर्ब अबिनाशी करता निंद दा, निन्दक हो के देण दुहाईआ। कोई भेव ना जाणे गहर गम्भीर सागर सिंध दा, संगी हो के संग ना कोई रखाईआ। जगत मकान हुजरा बणया रहे चिन्द दा, चिन्ता विच्चों बाहर ना कोई कढ्ढाईआ। लेखा मुके ना किसे ज़िंदगानी ज़िंद दा, ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी ना कोई बदलाईआ। राग सुणदे सारे सुरां वाली किंग दा, साचे शब्द ना कोई समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल खेल गुणी गहिंद दा, गहर गवर इक्क अखवाईआ।

जन भगत कदे ना जावे दोज़ख़ बहश्त, स्वर्गां विच्च डेरा कदे ना लाईआ। अपछरां भोगे ना कोई गृहसत, ममता ना कोई वधाईआ। इक्को पुरख अकाल मन्ने इष्ट, आशक माशूक दोहां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। सदा खुल्ही रक्खे दृष्ट, दिब नेत्र विच्च रुशनाईआ। मानस जन्म अन्त अख़ीरी चुरासी दी तारन आवे किशत, पिछला लेखा हिसाब बेबाक कराईआ। एह इशारा राम नूं दिता वशिष्ट, विशिआं वाला राम विषेश इक्को विच्च समाईआ। जिस दी कल्पणा विच्च अन्तर ना जावे भिृष्ट, भरमां विच्च ना कोई खुल्हाईआ। अयुध्या निवासी वेख लिस्ट, फरसत अगली दिती वखाईआ। गोबिन्द धार पिच्छों भारत खेल होणा ब्रिटिश, वैरी घर घर नज़री आईआ। मेरा नाउँ होणा टांक जिसत, इक्क दो वंड वंडाईआ। सति धर्म होणा निशट, नशिआं विच्च होवे लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां लोकमात विच्चों सारयां जाणा खिसक, पल्लू जगत नालों छुडाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणी पूरी करनी लिखत, जो भविख्तां विच्च समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क जणाईआ।

जन भगत कदे ना जाए मड़ी गोर कबर, लेखां वाला राह ना कोई तकाईआ। राह तक्के ना धरती उपर नीला अंबर, ज़िमीं असमान ना कोई वडयाईआ। प्रेम प्यार अंदर कर के साचा सबर, साबत सूरत तक्के धुर दा माहीआ। जाम प्याला पी के इक्को मधर, मध्धम

बैखरी परा पसन्ती चारे जाए तजाईआ। सुणे संदेशा धुर दी ख़बर, शास्त्रां वाली करे ना कोई पढ़ाईआ। जिस दा हुक्म लेख कोई कर ना सके रबड़, गलती विच्च दुरसती कर ना कोई वखाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत गुर अवतार पैगम्बर साध सन्त जिस दा निक्का जिहा टब्बर, टप्पयां वाली सभ नूं कर के गिआ पढ़ाईआ। बिन भगतां पुरख अकाल दीन दयाल सचखण्ड कीती ना किसे दी कदर, बेकदरी होई लुकाईआ। वशिष्ट ने किहा राम कलिजुग जिस वेले शत्तरीआं ने पहनआं खद्दर, किसे दी पूरी होणी नहीं सध्धर, पुरख अकाल करना पध्धर, उपद्दर विच्च वेखे जगत लुकाईआ। दीन दुनी होवे कतल, साचा मिले ना किसे पतन, पैगम्बरां दा चले कोई ना यतन, यथार्थ इक्को हुक्म वरताईआ। सन्त सुहेले आवे रक्खण, लक्ख चुरासी विच्चों वरोले मक्खण, दिशा वेखे उतर पूरब पच्छिम दक्खण, चारे खाणी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कूड़ी क्रिया जड़ आवे पट्टण चार वरन करे सफ़ाईआ। (१३ जेठ श सं २ मान कौर दे घर)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगतां ताले लग्गी रहे सदा कुंजी, कुफल बन्द ना कोई कराईआ। सच प्रेम दी मिली रहे पूंजी, अतोट अतुट्ट देणी वरताईआ। दीन मज़्ब दी देणी पए ना चुंगी, शरअ मसूल ना कोई लगाईआ। रसना रहे ना कोई गूंगी, गुण गहर गम्भीर सद गाईआ। बिन मेरी किरपा वस्त लभ्भे ना किते ढूंडी, सृष्ट सबाई फोल फुलाईआ। जन भगता कँवली करनी ऊंधी, नाभ विच्चों आब देणा चुआईआ। दर दर घर घर खा के दाल मसर मूंगी, असर आपणा देणा वखाईआ। बिन मेरे आत्मा दिसे ना कोई जीउँदी, अमर रूप ना कोई वटाईआ। दात बख्शण लग्गे नेंहों दी, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। धार मिल जाए अमृत मेहों दी, मेघला इक्क शरमाईआ। खेल तक्कीए अछल अभेओ दी, जन भगत झोली डाहीआ। सेज माणीएं ओस पिओ दी, जिथ्थे मतरेआ भगत नज़र कोई ना आईआ। प्रभू तेरे अग्गे शरीणी रक्खणी नहीं किसे घिओ दी, घृत नाल ना कोई वडयाईआ। साची खेल वेखणी अगम्मी दिउ दी, जिस दा देवत सुर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क तकाईआ।

जन भगत किसे नाल ना जोड़े रिश्ता, बंधन अवर ना कोई रखाईआ। लेखा रक्खे ना कोई फरिश्ता, फरिसत विच्चों आपणा आप बाहर कढ्ढाईआ। इक्को श्री भगवान उत्ते करे निसचा, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ। चार कुण्ट अवर ना कोई दिसदा, दह दिशा इक्को रूप समाईआ । गृह वेखे धुर दे मित दा, पतिपरमेश्वर पड़दा दए उठाईआ। मानस जन्म वेला जित्त दा, हार नेड़ कोई ना आईआ। साडा नाता नहीं कोई मुन रिक्ख दा, जो जंगलां विच्च बह के धूणीआं रहे तपाईआ। साडा प्यार नहीं जगत वाले सिख दा, जो सुख कारन तेरा नाम ध्याईआ । साडा लहणा देणा आदि जुगादी एकँकार इक्क दा,

इक्क इकल्ले दे वडयाईआ। जे भगत ना होवे तूं किस दा नाम लिखदा, तेरे नाम दी कदर कोई ना पाईआ। लेखा मुका दे करवट वाली पिट्ठ दा, पिछला अगला दे बदलाईआ। असीं सफ़र नहीं करना सवा गिठ दा, कफ्नी विच्च आपणा आप ना बन्द कराईआ। असीं कोई तेरा दवारा वेख्या नहीं पत्थर इट्ट दा, जिस नूं बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, जन भगतां हर घट दिसदा, देस देसन्तर तेरा ढोला गाईआ।

जन भगत नाम लए कोई ना मुल्ल दा, कीमत कर कोई ना पाईआ। तेरे प्यार अंदर तुलदा, भाणे विच्च समाईआ। लेखा मुका दे आपणी कुल दा, कुल मालक कुल तेरी झोली पाईआ। नज़ारा तक्क तेरे असल असूल दा, वसल विच्च आपणा आप समाईआ। मानस जन्म वेला वक्त नहीं फज़ूल दा, फ़ैसला हक़ देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत तेरी याद कदे ना भुल्लदा, भुल्लेखे विच्च ना कोई भरमाईआ।

जन भगत प्रभ चले तेरे भाउ, भवर विच्च ना कोई भवाईआ। जपे साचा नाउँ, नईआ नौका चरन ना कोई टिकाईआ। वसे तेरे गाउँ, गली कूचे फिरे ना वाहो दाहीआ। कर किरपा पकड़ उहनां बाहों, बल आपणा आप प्रगटाईआ। कलिजुग अन्त दे ठंडी छाउँ, अगनी अग्ग दे बुझाईआ। तेरे हत्थ सच्चा नयाउँ, अदल इन्साफ़ दे वरवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तैनूं करदे वाहो वाहो, वाहिगुरू तेरी सरनाईआ। तेरे मिलण दा सच्चा चाओ, घनेरा घर घर नज़री आईआ। पान्धी भुल्ले ना कोई राहों, जो तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे होणा सहाईआ।

जन भगत तेरा नूर इक्को लभ्भदा, अंदरे अंदर खोज खुजाईआ। जिथ्थे झगड़ा मुक्के हब दा, जगत सबब ना कोई लड़ाईआ। विछोड़ा मिटे पिछला कब्ब दा, कदीम दे कर्म देवे कटाईआ। नूर नज़री आवे इक्को रब्ब दा, जो रहमत रिहा कमाईआ। हुक्मे अंदर भगतां सदा सद्द दा, सुनेहड़ा शब्द धार पहुंचाईआ। प्रेम प्रीती अंदर परमात्म आत्म नाल लग्गदा, लग मातर नज़र कोई ना आईआ। प्रकाश हो के जगदा, जोती जोत होवे रुशनाईआ। काया भवरी विच्चों कढ्ढदा, इशारा अगला इक्क वरवाईआ। सच सिंघासण जिथ्थे सजदा, साजण इक्को सोभा पाईआ। सच नगारा इक्को वजदा, नाम अगम्मा होए शनवाईआ। दीपक निराला इक्को जगदा, तेल बाती ना कोई वरवाईआ। अबिनाशी करता जिथ्थे वसदा, दर घर ठांडा सोहणा नज़री आईआ। जन भगत मालक ओसे हक़ दा, जिस हक़ विच्च शक़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी सदा पैज रक्खदा, भगतां भजन आपणा आप जणाईआ। (१३ जेठ श सं २ माया देवी दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत भवे किसे ना कूट, कुटीआ जगत ना कोई बणाईआ। खाक रमा ना बणे अवधूत, माटी खेह ना कोई उडाईआ । गली गली ना करे कूच, घर घर ना अलख जगाईआ। भाग लगाए काया पंज भूत, भाओ आपणा पूर कराईआ। चिन्ता ग़म मिटा के दूख, दलिद्दर दए गवाईआ। संसा रोग जाए चूक, चुकन्ना हो के वेख वखाईआ। सति सच दी पावे सूझ, बुद्ध बिबेक बणाईआ। घर तक्क महल्ल अरूज, पेख पेख खुशी प्रगटाईआ । झगड़ा रहे ना एक दूज, दूआ एका नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दे रंग आप समाईआ।

जन भगत वस्तू लभ्भे ना किसे बज़ार, गली गली ना फेरा पाईआ। नेत्र रोवे ना ज़ारो ज़ार, हन्झआं धार ना कोई वहाईआ। अन्तर अन्तर करे सच प्यार, मंत्र फुरने वाला गाईआ। बसन्तर सके कोई ना साड़, अगनी तत्त ना कोई जलाईआ। प्रकाश होवे नाड़ नाड़, हाडी माटी सोभा पाईआ। साचा वेखे इक्क अखाड़, सुरती शब्दी मिल के रंग रहे वखाईआ। शब्द अनादी वज्जे ताड़ ताड़, पंच विकारा सिर ना कोई उठाईआ । सदा खुलया रहे किवाड़, बंधन बन्द ना कोई कराईआ। देणी पए ना किसे आड़, आड़्त जगत ना कोई वखाईआ। इक्को दरस करे निरँकार, निरवैर मिल के खुशी मनाईआ। जो सुणे सदा पुकार, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जन भगतां होवे मददगार, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ । कलिजुग होण ना देवे खुआर, खुआरी गवारी दोवें लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्चा अधार, धीरज धीर इक्क वखाईआ।

जन भगत पुस्तक पढ़े ना कोई कताब, कुतबखाना फोलण कोई ना जाईआ। सतार वजाए ना कोई रबाब, सरंगा कंध ना कोई लगाईआ। मुहब्बत विच्च मिले इक्क अहबाब, जो मेहर नज़र उठाईआ। प्याला देवे हयाते आब, आबरू रक्खे थाउँ थाईंआ। साचा बख्श के हक़ खताब, ख़ता पिछली साफ़ कराईआ। जन्म जन्म चों कर आज़ाद, मार्ग साचा दए वखाईआ। जिहड़ा होवे ना कदे बरबाद, अबादी विच्च बहुती संखिआ ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साची दाद, दाम्तान अवर ना कोई दोहराईआ।

जन भगत होए ना कदे दिलगीर, जिंदादिल नज़री आईआ। दर दर दरवेश ना बणे फ़कीर, फ़िकरा प्रभ दा ढोला गाईआ। शरअ वाली पाए ना कोई ज़ंजीर, डोरी तन्द ना कोई बंधाईआ। सागराँ विच्चों लभ्भे ना नीर, अमृत आत्म रस चवाईआ। साहिब स्वामी इक्को कर के दस्तगीर, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। सदा रहे बग़लगीर, हम साजण हो के सोभा पाईआ। जिथ्थे पढ़नी पए ना कुरान मज़ीद, आइत सुणन कोई ना आईआ । सदा खुशी रहे तबीअत, तब्बा तबीब ना कोई बदलाईआ। नज़री आए हक़ असलीअत, असल वेखे चाउँ चाईंआ। भगत भगवान जाण वलदीअत, वाहद इक्को सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, दस्सणहारा सच नसीहत, दूजा नाम नशर ना कोई कराईआ। (१३ जेठ श सं २ बीबी शाहणी दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत पढ़े किसे ना पाठशाला, सिख्या जगत ना कोई जणाईआ। वड़े किसे ना धर्मसाला, जो इट्टां पत्थरां नाल सोभा पाईआ। नहावे ना किसे ताला, जो बूंद बूंद मिल के वहण वहाईआ। कूड़ी घाले ना कोई घाला, घायल माया ना कोई कराईआ। इक्को मिले पुरख अकाला, अकल आपणी छड्ड चतराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग दए वखाईआ।

जन भगत पढ़े ना किसे मकतब मदरसे, सबक लैण कोई ना जाईआ। लेखा लिखे ना उपर किसे फट्टे, पट्टी फट्टी ना कोई बणाईआ। कैदा ख़रीदे ना किसे हट्टे, उंगलां अक्खरां उत्ते घसाईआ। इक्को ओट प्रभ दी रक्खे, जो मालक धुर दा नज़री आईआ। जो सिख्या साची दस्से, दसम दवारी तों अग्गे करे पढ़ाईआ। प्रीती विच्च करे पक्के, मेहर मोहर नज़र लगाईआ। खुशी रक्खे पहर अठ्ठे, अठां तत्तां वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म कर्म दे मेट के रट्टे, लेखा अगला दए चुकाईआ।

जन भगत पढ़े ना कोल किसे उसताद, हिंदसा हरफ़ ना कोई जणाईआ। बंधन पाए ना कोई समाज, जाती वंड ना कोई वंडाईआ। लेखा लिखे ना कोई हिसाब, वधाओ घटाओ ना कोई रखाईआ। इक्को प्रभ दी रक्खे याद, याददाशत ना कदे भुलाईआ। जिस काया खेड़ा कीता आबाद, इबादत आपणी दए समझाईआ। प्रेम अंदर मारे आवाज़, सुत्यां लए जगाईआ। मानस जन्म पूरा करे काज, करनी आपणी इक्क दृढ़ाईआ। सच दवार दा सवराज, सरोपा इक्क रखाईआ। जन्म कर्म दा बदल रिवाज, राह आपणे लए चलाईआ । किसे दा होण ना देवे मुहताज, सच भंडारा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे बेड़े चाढ़ जहाज़, जगत जहालत विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। (१३ जेठ श सं २ प्रकाशो देवी दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत अवसथा सदा बाल, पुरख अकाल आपणी गोद टिकाइंदा। लोकमात मातलोक दे साचे लाल, लाल गुलाला अगम्मी रंग चढ़ाइंदा। जुग चौकड़ी सद करदा रहे प्रितपाल, सेवक हो के आपणी सेव कमाइंदा। शब्द अनादी बणाउँदा रहे दलाल, विचोला हो के विचला भेव खुल्लाइंदा। मुरीदां मुशर्द हो के सुणदा रहे हाल, हालत सभ दी फोल

फुलाइंदा। निरगुण हो के वसदा रहे नाल, सरगुण मेला आप कराइंदा । जुग जुग जगत चले अव्वलड़ी चाल, भगत भगवन्त आपणी कारे लाइंदा । साचा मंत्र अन्तर निरंतर देवे सिखाल, इष्टी दृष्टी इक्को घर वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा दस्स सच्ची धर्मसाल, धर्म दी धिर आपणे नाल रखवाइंदा।

जन भगत मांगे इक्क दवार, घर ठांडे डेरा लाईआ। जिथ्थे मिले वस्त नाम हरि थार, थिर घर वज्जदी रहे वधाईआ। साची चढ़ी रहे खुमार, खुशी आपणा रंग वखाईआ। भरमे भुल्ले ना विच्च संसार, सहिसा ग़म ना कोई सताईआ। आत्म माणे आपणी बहार, बसन्त बसन्त विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार अधार, आदर इक्को घर रखवाईआ।

जन भगत सद पूरी होवे मुराद, मुरीद मुशर्द मिल के खुशी मनाईआ। ठाकर करदा रहे इमदाद, मेहरवान हो के आप सहाईआ। आपणे उपर रक्खे शाकर शाद, शदीद रोग ना कोई सताईआ। करनी होण ना देवे बरबाद, करता कर्म वेख वखाईआ। लेखा अग्गे मंगे ना कोई जुआब, जवाब तल्बी विच्च ना कोई रखवाईआ। दो जहान देण शाबाश, वाहवा कर के ढोले गाईआ। पुरख अकाल होया साथ, सगला संग निभाईआ। झगड़ा पृथ्मी आकाश, गगनां उत्ते मंगल वेख वखाईआ। लेखे लग्गा साह स्वास, सवारथ मिली माण वडयाईआ। दीआ जोत होई प्रकाश, बाती कमलापाती नाम टिकाईआ। प्रभ चरन मिल्या परताप, परत फेर कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले वेख के आप, आपणे घर टिकाईआ।

जन भगत मालक साचे घर दा, घिरना विच्च कदे ना आईआ । जिथ्थे इक्को दीपक जगदा, जग्गा जग्गा ना कोई रुशनाईआ। पुरख अकाल सच सिँघासण सजदा, सोभावन्त डेरा लाईआ । हुक्म सुनेहड़ा जुग जुग घलदा, फ़रमाना आप उपाईआ। लक्ख चुरासी चोली रंगदा, तन माटी कर सफ़ाईआ। जन भगतां सच बेनन्ती मन्नदा, सुणनहार गुसाईंआ। कदे कच्चा ना होवे कन्न दा, चुगली निन्दया सुणन कोई ना पाईआ। प्यारा बणे साचे जन दा, जो जन्म प्रभ दी झोली पाईआ। पूरा लेखा करे पवण स्वास दम दा, दामन आपणा दए फड़ाईआ। लेखा रहे ना कोई मन दा, मनसा मोह कूड़ दए चुकाईआ। कर प्रकाश साचे चन्न दा, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। भेव खुल्ला के हँ ब्रह्म दा, पारब्रह्म आपणे विच्च समाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा सद साचे घर टिकाईआ।

हरि भगत वेखे गृह ठंडा, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ । जगत वासना विच्च ना होए गंदा, कूड़ी क्रिया ना कोई रखवाईआ। रसना वाला सुणे ना कोई छन्दा, अगम्मी नाद करे शनवाईआ। वासना वाला दिसे ना कोई बन्दा, बन्दगी विच्च बंधन सारे जाए तुड़ाईआ। मंज़ल पौड़ी पार होवे डण्डा, डण्डौत कर के सीस झुकाईआ। पूरी होवे मनसा आसा

उमंगा, सहिसा सहिम रहे ना राईआ। धाम सुहावणा मिले चंगा, चंगिआईआं बुरयाईआं दा लेखा दए मुकाईआ । चरनां हेठां वैहन्दी वखाए गंगा, गोदावरी सुरसती जमना झुक झुक लागण पाईआ। मिले मेल सूरा सर्बंगा, साहिब स्वामी नज़री आईआ। जिस दा प्यार इक्क अनन्दा, चिन्ता रोग दए गवाईआ । सच दवारा वखावे धुर दरगाह ठंडा, सचखण्ड निवासी मेहर नज़र उठाईआ । जन भगत प्रभ देवे सच सुगंधा, दुरगंधां अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। दीन दयाल हो बख़्शंदा, बख़्शिश रहमत आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां कारन सच दवार दा सदा खुल्ला रक्खे जंदा, कुफल काफर बन्द ना कोई कराईआ। (१४ जेठ श सं २ हरी सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत प्रेम प्यारा निर्मल जोत, इष्टां दा इष्ट इक्को वेख वखाईआ। धाम वेखे सचखण्ड दवारा धुर दा कोट, बंक दवार छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। मन बुद्धि दी करे ना सोच, अनभव अंदर आपणी अक्ख खुल्लाईआ । लेखा जाणे ना लोक परलोक, ब्रह्मण्डां खण्डां ध्यान ना कोई लगाईआ। इक्को पतिपरमेश्वर पुरख अकाल दी रक्खे ओट, ओड़क आपणा आप ओसे विच्च समाईआ। साचा ढोला गाउँदा रहे सलोक, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अंदर साचा नूर करे रुशनाईआ ।

जन भगत इक्को होवे धार, धारना विच्च दूजी कदे ना आईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, संसारी अंदर आपणा आप समाईआ। सति धर्म दा बोल जैकार, तूंही तूंही राग अलाईआ । दर वेख ठांडा दरबार, नमस्ते कह के सीस झुकाईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों होए बाहर, माया ममता ना कोई सताईआ। मंज़ल चढ़े जगत दुष्वार, दुशमण अंदरों बाहर कढ्ढाईआ । सुरती शब्दी कर प्यार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी लेखा दए मुकाईआ। एका रंग माणे कन्त भतार, आत्म सेजा सोभा पाईआ। दीआ बाती कमलापाती घर करे उजिआर, उजाला निराला आपणा इक्क दरसाईआ। जिस दा हुक्म चले सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग ना कोई उलटाईआ। सो भगत सुहेला आवे आपणी वार, वारता पिछली वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों लए उबार, निरगुण हो के सरगुण लए जगाईआ। जिस दा लेखा कागत कलम ना लिखणहार, कातब चले ना कोई चतराईआ। संदेशे विच्च सुनेहड़ा देवे आप निरँकार, हुक्मे अंदर हुक्म आप मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले लावे पार, पारस रूप देवे वखाईआ।

जन भगत दूसर कोई ना जाणे जुगत, जुगती विच्च कदे ना आईआ। कदी ना मंगे मुकत, मुकती तों परे आपणा घर वसाईआ । जिथ्थे प्रभ दा दर्शन होवे मुफ्त, टकयां दी

लोड़ रहे ना राईआ। मात गरभ फेर ना आवे उलट, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ।

जन भगत कूड़ी क्रिया मेटे लीक, लकीर फ़कीर ना कदे अखवाईआ। प्रभ दा दर्शन मंगे ठीक, ठाकर इक्को लए ध्याईआ। जो देवे वड्डिआई ऊँच नीच, राओ रंकां होए सहाईआ । सदा बैठा रहे अतीत, त्रैगुण विच्च सके ना कोई फसाईआ। जन भगतां काया माटी ठांडी करे सीत, अमृत धारा मुख चवाईआ। सच दवार धुर दी दस्से प्रीत, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला मेले सहज सुभाईआ।

जन भगत किसे ना बणे कदे खादम, खिदमतगार इक्को घर दा नज़री आईआ। मानस रूप जाणे धुर दा आदम, हवा पवण नाल उडाईआ। लेखा समझे ना कोई काहना यादव, यदिप आपणे रंग विच्च समाईआ। निरगुण सरगुण हुंदा वेखे तबादल, तबदीली अंदर खुशी मनाईआ। सच दवारे इन्साफ़ तक्के आदल, अदली होवे बेपरवाहीआ। जिथ्थे दूजा रहे ना कोई कातल, मकतूल रूप ना कोई वटाईआ। जल्वा होए बातन, ज़रा ज़रा रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी दिसे साथन, सगला संग निभाईआ। भगतां पढ़े गाथन, ढोला इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति दवारा दस्से धुर दा पातन, पतन इक्को दए वखाईआ।

जन भगत दूजे जाए कदे ना पत्तन, घाट नज़र कोई ना आईआ। पुरख अकाल मिलण दा इक्को करे यतन, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। मुड़ के जाणा ओस वतन, जिस गृह विच्चों होई जुदाईआ। साहिब सतिगुर पत आपे आवे रक्खण, रक्खया करे थाउँ थाईंआ । दरस वखावे आपणी अक्खण, आख़र आपणा पड़दा दए उठाईआ। जन भगतां हिरदे आवे वसण, उहला अंदर रहे ना राईआ। सच्चा मार्ग आवे दस्सण, सहजे करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहणा देणा चुकाए आपणे हत्थन, दूसर हत्थ ना कोई फड़ाईआ।

जन भगत आत्म कदे ना होवे अकेली, अकल कलधारी मेल मिलाइंदा। पुरख अकाल बणे बेली, बेले जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वेख वखाइंदा। सति प्यार बणा के चेली, मुहब्बत महबूब विच्चों प्रगटाइंदा। शब्दी धार बणा सहेली, सज्जण हो के संग रखाइंदा । अचरज खेल पारब्रह्म आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेली, ख़ालक हो के भेव आपणे विच्च छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सीस रक्खे ओस हथेली, जिस हत्थ उतों फड़ परे ना कोई सुटाइंदा । (१४ जेठ श सं २ वकील सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगतां धाम मिले अनडिठ्ठा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मिले अमृत रस इक्को मिठ्ठा, विरव रूप ना कोई बदलाईआ। जन्म कर्म दा लेखा हो जाए चिट्टा, काली शाही ना रंग रंगाईआ। मानस जन्म दा अन्त अख़ीरी निकले सिट्टा, सिट्टेबाजी मुक्के जगत लोकाईआ। पुरख अबिनाशी इक्को मिले पिता, पतिपरमेश्वर शहनशाहीआ। जो साचे भगतां करे साचा हित्ता, हितकारी हो के वेख वखाईआ। मेल मिलावे नित्त नवित्ता, जुग चौकड़ी कार कमाईआ। एथे ओथे दो जहानां कदे ना देवे पिच्छा, पल्लू गंढ ना कदे खुल्हाईआ। सदा सुहेला करदा रहे रिच्छा, रच्छक हो के वेख वखाईआ। नाम निधाना पाउँदा रहे भिक्खा, भिक्खक झोली आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखे लावे वड्डा निक्का, निक्का वड्डा जन भगत मांगे इक्को सरनगत सरन सरनाईआ।

मालक मिले तरनी तरन, तारनहार बेपरवाहीआ। जिस दी मंज़ल सन्त सुहेले चढ़न, अद्धविचकार ना कोई अटकाईआ। धुर दा ढोला पढ़न, बोध अगाध समझाईआ। जीवण विच्च जीवण मरन विच्च होवे ना कदे मरन, मर जीवत रूप वटाईआ। सच दवारे खड़्हन, सनमुख हो के सोभा पाईआ। नित्त नवित्त दर्शन करन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा दए चुकाईआ।

जन भगत रूप धारे ना कदे जल मीन, विछोड़ा अन्तर ना कोई रखाईआ। लेखा मुका के लोक तीन, त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ। इक्को परम पुरख दे हो अद्धीन, सीस जगदीश देवे झुकाईआ। मार्ग मंज़ल चढ़े दुष्वार महीन, महबूब मिल के खुशी मनाईआ। परवरदिगार उत्ते रक्खे यकीन, दलील दलील विच्चों ना कोई प्रगटाईआ। सो स्वामी आपे करे तसलीम, तसबी माला परे दए सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक्क तालीम, जिस दी अलफ़ ये सिफ्त कर के खुशी मनाईआ।

जन भगत अगम्म पढ़े हरफ़, हरूफ़ां जोड़ ना कोई जुड़ाईआ। जो दीन दुनी नालों करे बेतरफ़, नाता कूड़ा दए छुडाईआ। माया ममता मिटे हरस, हवस देवे बुझाईआ। झगड़ा मुका के उत्ते अर्श, सच दवारे दए बहाईआ। लेखा रहे ना कोई फर्श , फरेबां विच्च ना कोई भरमाईआ। मिले मेल मरदाने मरद, मालक इक्को नज़री आईआ। जिथ्थे शरअ छुरी चले ना करद, कदीम दा मालक इक्को सोभा पाईआ। ग़रीब निमाणयां जन भगतां वंडे दर्द, दीनां दुःख आपणे विच्च छुपाईआ। लोकमात सन्त सुहेला हो के आवे परत, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। चार युग चार वरन अठारां बरन मानव जाती लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त अंडज जेरज उत्भुज सेतज चारे खाणी सभ दी रक्खे फरद, बच्या रहण कोई ना पाईआ। भगतन मीता ठांडा सीता कदे होण ना देवे हर्ज, हर्जाना श्री भगवाना नाम निधाना सभ दी झोली पाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त आपणी ताल खेल करे असचरज, अचरज दा मालक अचरज विच्च अचरज वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेट के जन्म जन्म दी तड़प, तपश भटक वाली बुझाईआ।

जन भगत वेखे धुर दा गृह, गरामी इनामी आपणा ध्यान लगाईआ। जिथ्थे समरथ पुरख अबिनाशी रहे, दूजा रहबर नज़र कोई ना आईआ। दीन दुनी सृष्टी दृष्टी होए कोई ना लै, विष्न ब्रह्मा शिव नज़र कोई ना आईआ। हुक्म संदेशा धुर फ़रमाण तख़त निवासी इक्को कहे, थिर घर वासी साचे घर आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए धुर दा घर, घराना इक्क दरसाईआ।

जन भगत साची मंज़ल वेखे महबूब, अद्ध विच्च डेरा कोई ना लाईआ। जिस दा अर्श तों उपर अरूज, कुर्श कुराह ना कोई वखाईआ। जिस दी समझे ना कोई हदूद, हिस्सा वंड ना कोई वंडाईआ। जो हर घट हर थां लक्ख चुरासी मौजूद, निरगुण हो के सरगुण सोभा पाईआ। सो साहिब स्वामी जन भगतां रक्खे महिफ़ूज़, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। भाग लगाए काया काअबा कलबूत, हुक्म इक्को दए जणाईआ। जिस दा सच दरबार सचखण्ड मिले सबूत, साबत सूरत इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले दर सहजे मेल मिलाईआ।

जन भगत मंजल चढ़े सच अटारी, अट्टल पदवी इक्को पाईआ। जिथ्थे निर्मल जोत जगे निरँकारी, दीवा बाती नज़र कोई ना आईआ। तख़त निवासी इक्को सोहे शाह पातशाह शहनशाह वड बलकारी, सुलतान भूप सोभा पाईआ। जिस दा हुक्म चले जुग चारी, ब्रह्मण्ड खण्ड सके ना कोई उलटाईआ। जिस दी धार पैगम्बर गुर अवतारी, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। जो जन भगतां दए अधारी, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। साचे सन्तां देवे नाम खुमारी, मसत दीवाने दए कराईआ। गुरमुखां जाए पैज सवारी, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुरसिख साची मंजल जाए चाढ़ी, अगम्म अथाह दए वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेला करे खेल नयारी, निरँकार आपणी कार कमाईआ।

जन भगत आदि जुगादि सदा सद रहे उजल, अन्ध अन्धेर ना कोई कराईआ। अंदर रहे कोई ना गुंझल, सुखमन टेडी बंक ना कोई अटकाईआ। धुर दा हुक्म संदेशा बुज्झण, शब्दी शब्द होए शनवाईआ। लेखा जाणन आथण उगण, उतर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। प्रभ सरनाई चरन कँवल बिन शस्त्र झूजण, कातल मकतूल आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे साची मंज़ल हक़ महबूब, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ।

जन भगत चढ़े अगम्मी पौड़ी, डण्डे हत्थ ना कोई टिकाईआ। गली दिसे ना कोई भीड़ी सौड़ी, डूंघी भवर ना कोई भवाईआ। वासना रहे ना कोई कौड़ी, सुगंधी इक्को इक्क प्रगटाईआ। आत्म परमात्म साचे मन्दर बण जाए साची जोड़ी, लुड़ींदा साजण घर घर नज़री आईआ। मनूआं मन करे ना बौहड़ी बौहड़ी, बुद्धि देवे ना कोई दुहाईआ। तत्तां वाली अगन ना उबले तौड़ी, साढे तिन्न हत्थ वज्जदी रहे वधाईआ। पंच विकारा करे कोई

ना चोरी, चुरसते सभ दे बन्द कराईआ। आपणा दरस दे के भोरी, भोरे विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। झगड़ा चुका के मड़ी गोरी, गहर गवर आपणे विच्च समाईआ। जन भगत आत्मा सचखण्ड दवारे खुशीआं नाल जाए दौड़ी, भज्जे वाहो दाहीआ। पुरख अबिनाशी खेल मुका के मोरी तोरी, तोरा मोरा इक्को दए बणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां भाग करे मथोरी, मिथ्या दिसे सर्ब लोकाईआ। (१५ जेठ श सं २ जस कौर दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत दर्शन मंगे पुरख अकाल, अकल कलधारी मिले बेपरवाहीआ। साहिब स्वामी लभ्भे दीन दयाल, जो दीन कर के रच्छया खुशी मनाईआ। लेखे लाए जन्म जन्म दी कीती घाल, घायल हो के पट्टी नाम बंधाईआ। गोदी चुक्के आपणे लाल, बाल अंञाणे दए वडयाईआ। सदा सुहेला हो के करे प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। चरन दवार बख्शे सच्ची धर्मसाल, , दर घर साचे वज्जदी रहे वधाईआ। बिरहों विछोड़े विच्च कदे ना करे बेहाल, बेहबल रूप ना कोई बदलाईआ। नाम शब्द दे के सच्चा धन माल, धनी धुर दे दए बणाईआ। निरमाणता विच्च रक्खे कंगाल, अद्धीनगी इक्को इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क समझाईआ।

जन भगत सुणे इक्क संदेशा, अठ्ठे पहर ध्यान लगाईआ। मिले मेल नर नरेशा, जो नरायण हो के नरां दए वडयाईआ। झगड़ा मुकाए ब्रह्मण्ड खण्ड देस परदेशा, पुरीआं लोआं विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। मिन्नत करनी ना पए किसे ब्रह्मा विष्न महेश गणेशा, शंकर सीस ना कोई निवाईआ। दूजा मंगे कोई ना लेखा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। मंज़ल चढ़दयां लग्गे कोई ना ठेडा, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। सच दवार दा खुल्ले भेदा, पड़दा रहे ना राईआ। फोलणा पए ना चार वेदां, पुरान अठारां ना कोई खुलाईआ। सिध्धा मेहरवान नाल मिले दीदा, दीदा दानिशता इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दस्से सिफ्त नाम तआरीफा, तुआरफ विच्च पड़दा दए उठाईआ।

जन भगत पड़दा देवे चुक्क, चारों कुण्ट अक्ख खुलाईआ। अन्तर उहला रहे लुक, अन्ध अन्धेर ना कोई जणाईआ। मनूआं मन ना होवे चुप, उच्ची कूक ना कोई सुणाईआ। जगत तृष्ना मिटे भुक्ख, काम क्रोध ना कोई हलकाईआ। लक्ख चुरासी रहे ना दुःख, जूनी जून ना कोई भवाईआ। घर स्वामी ठाकर मिले अबिनाशी अचुत, चेतन्न सुरती दए कराईआ। अंदरे अंदर बदल के रुख, रुखसत दे के नाता जगत देवे तुड़ाईआ। उजल करे मुख, मुफ़त आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारों पए उठ, निरगुण हो के नूर करे रुशनाईआ।

जन भगत कदे ना होवे दुखीआ, दलिद्दर विच्च कदे ना आईआ। आत्म परमात्म

मिल के करे सुखीआ, सुखसागर विच्च समाईआ। इक्को ध्यान रक्खे रुचीआ, रचना बाहर ना कोई रखाईआ। बुद्धि बिबेक करे , आपणा आप लए अपनाईआ। मन वासना कट्टे कोई ना बुत्तीआ, बुतखाने वज्जे वधाईआ। भाओ रहे ना कोई दुतीआ, द्वैती लेखा दए चुकाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत अंदर माणे सदा खुशीआ, खुशहाल मिल के आपणा आप लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाग लगाए काया कुटीआ, कुटलता अंदरों बाहर कढ्ढाईआ।

जन भगत काया कुटीआ करे खिआल, लेखा होर ना कोई रखाईआ। जिस घर वसे दीन दयाल, सो मन्दर सोभा पाईआ। सुरती शब्दी सुणे ताल, तलवाड़ा वज्जे चाईं चाईंआ। माया ममता तुट्टे जंजाल, जागरत जोत होए रुशनाईआ। जीवन जिंदगी हल होए सवाल, फ़िकरा अवर ना कोई पढ़ाईआ। लेखा रहे ना शाह कंगाल, किंगरे किंगर मरदंग ना कोई वजाईआ। नज़री आए दीन दयाल, बेनज़ीर आपणी नज़र बदलाईआ। जन भगतां सद रक्खे चरनां नाल, चरनोदक बूंद स्वांती मुख चुआईआ। लक्ख चुरासी विच्चों भाल, गफ़लत विच्चों लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा धन माल, नाम खज़ीना इक्को दए वखाईआ।

जन भगत सद रक्खे इक्को घर वसेरा, जिथ्थे विसर कदे ना जाईआ। जुग चौकड़ी होए ना कदे अन्धेरा, किशना शुक्ला परख थित ना कोई वंडाईआ। झगड़ा रहे ना मेरा तेरा, तूं मैं ना कोई लड़ाईआ। इक्को वसे नगर खेड़ा, जिथ्थे साहिब स्वामी डेरा लाईआ। तत्तां वाला रहे ना झेड़ा, दीन मज़्ब रो रो देवे ना कोई दुहाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी करनहारा मेहरा, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। जन भगतां करे हक़, नबेड़ा, हकीकत विच्चों हकीकत खोज खुजाईआ। चरन सरन सरनाई आया जेहड़ा, जगत झेड़े विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। शौह दरयाए डुब्बण ना देवे बेड़ा, बण मलाह खेवट खेटा बंन्हे देवे लगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सतिगुर सच्चा आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक्को बथेरा, बहुते गुरू कम्म किसे ना आईआ। इक्को रंग रवे सदा सदा सद गुरू गुर चेला, गुर गोबिन्द गिआ समझाईआ। मानस जन्म होवे वक्त सुहेला, सुहञ्जणी घड़ी मिले वडयाईआ। जन भगतां परमात्म लभ्भणा ना पए जंगल जूह विच्च बेला, घर बैठयां घर विच्च घर दए समझाईआ। जो वसणहारा धाम नवेला, निज घर वासी पुरख अबिनाशी पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां करे बन्द खलासी, बंधन अग्गे ना कोई रखाईआ।

जन भगत किसे दा बणे ना कदे खादम, खिदमतगार ना कोई अखवाईआ। जगत शरअ ना कोई बांधन, बंधना विच्च ना कोई भटकाईआ। प्रकाश तक्के ना सूरज चांदन, सति जोत वेखे चाईं चाईंआ। पैसयां टकयां दी लभ्भे कदे ना आमदन, आमद विच्च खुशामद विच्च बरामद विच्च राह तक्के बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां निरगुण

धार आपणे मिलण दा दरस्स के साधन, सिध्धा आपणे रंग समाईआ। (१५ जेठ श सं २ भगत सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत अन्तर आत्म परमात्म नाल जाए जुड़, नाता बिधाता इक्क रखाईआ। किसे आस ना रक्खे देवत सुर, विष्न ब्रह्मा शिव सीस ना कोई झुकाईआ। बाहरों सुणे ना कोई राग ताल सुर, धुन आत्मक सुण के खुशी मनाईआ। जगत वस्त दी समझे कोई ना थुड़, नाम भंडारा लै के हस्से चाईं चाईंआ। पान्धी बण के मंज़ल चढ़े धुर, धाम दवारे जा के सोभा पाईआ। जिथ्थे जा के कोई ना आवे मुड़, प्रभ चरन कँवल बैठे डेरा लाईआ। पुरख अबिनाशी साहिब स्वामी इक्को मिले सतिगुर, सतिगुरू गुर गोर विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत इक्को दर रहे हज़ूरी, हाज़र हो के सेव कमाईआ।

सचखण्ड दी लै मनज़ूरी, लेखा पिछला दए चुकाईआ। वासना रहे कोई ना कूड़ी, कूड़ कुटंब ना भरम भुलाईआ। बुद्धि रहे ना मूर्ख, मूढ़ी, चतर सुघड़ वज्जे वधाईआ। मंज़ल रहे ना नेड़े दूरी, पैंडा अगला दए मुकाईआ। मानस जन्म लेखे लग्गे ज़रूरी, चुरासी विच्च ना कोई भवाईआ। इक्को दर्शन करे नूरी, नूर नुराना नज़री आईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी लेखे लग्गे मज़दूरी, मुशकल अग्गे ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ।

जन भगत कदे ना रहे उहले, पड़दिआं विच्चों पड़दा लए उठाईआ। सुरती शब्दी प्रीतम विच्च मौले, मौला घर में नज़री आईआ। देवे वड्डिआई उपर धरन धरत धवले, धौल हस्से चाईं चाईंआ। करे प्रकाश नूर अलाही अव्वले, अव्वल इक्को एकँकार बेपरवाहीआ। जन भगत सुहेले मसती अंदर करे बवले, बाबल बावरा आपणा रंग लए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वजावण ना देवे कोई हत्थां वाले तबले, तपदे हिरदे शांत करके सति दए समझाईआ।

जन भगत सांतक होवे सदा सति, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। इक्को उपजे ब्रह्मत, ब्रह्म विद्या दए समझाईआ। नाड़ी नाड़ी ना उबले रत, बहत्तर भवर ना कोई भवाईआ । अगनी कूड़ पोह ना सके अग्ग, अमृत मेघ दए बरसाईआ। हँस बुद्धि बणाए कग, कागों हँस उडाईआ। दरस वखा उपर शाह रग, शमां बुझी दए जगाईआ। जगत वासना दूर कराए हद्द, हदूद आपणी दए वखाईआ। जिथ्थे इक्को नाद रिहा वज, आदि जुगादि करे शनवाईआ। दीपक जोती रिहा जग, अन्ध अन्धेरा रिहा मिटाईआ। भगत भगवान कदे ना होवण अड्ड, सुहञ्जणी सेज सोभा पाईआ । पिछला लेखा पिच्छे जाए छड्ड, अग्गे अगला मालक मिले बेपरवाहीआ। जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगतां नाल मिल

के बणदी यद्द, पुशत पनाह सद आपणा हत्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले साचे गृह लवे सद्द, सद्दा होका आपणा नाम सुणाईआ।

जन भगत राह तक्के गहर गम्भीर, गवर इक्को नज़री आईआ। जिस दा तत्तां वाला नहीं शरीर, पंज तत्त काया देवणहार वडयाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर गुर अवतार पैगम्बर पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी चारे बाणी चारे खाणी विच्चों गाईआ। शरअ शरीअत तन माटी ख़ाकी पा जंज़ीर, ज़ेर ज़बर गए समझाईआ। मंज़ल दस्स के चोटी अख़ीर, वाहवा कह के ढोले रहे सुणाईआ। जिस दी नज़र ना आए किसे तस्वीर, मुसव्वर रूप ना किसे दरसाईआ। जिस नूं सजदा कीता कबीर, कबरां विच्चों बाहर डेरा गिआ लगाईआ। हज़रतां किहा आमीन, तेरी बेपरवाहीआ। भगतां देवे यकीन, भरवासा इक्को इक्क रखाईआ। हुक्मे अंदर दे तलकीन, तुलबे सारे दए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे साचे मार्ग दए लगाईआ।

जन भगत लभ्भे इक्क मलाह, खेवट खेटा अवर ना कोई रखाईआ। जो सिधा सचखण्ड दा दस्से राह, दूजी बिधी ना कोई समझाईआ। मंजल मंज़ल साची मजल दए पहुंचा, पन्ध अग्गे रहे ना राईआ। निरअक्खर वक्खर सिख्या दए सखा, विद्या दा लेखा दए चुकाईआ। प्रेम प्यार दी भिच्छया देवे पा, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा दए उठाईआ। पार करा के थल अस्गाह, टिल्ले पर्बत चोटी चरनां हेठ दबाईआ। धुर दा दस्स के इक्को नां, नाउँ निरँकार अंदर दए वसाईआ। सदा सुहेला हो के देवे ठंडी छाँ, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। बाल अंञाणयां बणे पिता मां, गोदी आपणी लए उठाईआ। जन भगतां वखा के धुर दा थां, डेरा पिछला दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जिन्हां नाल मिल के शब्दी धार हां विच्च कर लई हां, हार जित्त दा लेखा दए चुकाईआ। (१५ जेठ श सं २ सेवा सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत प्रभ मिलण दा रक्खे शौंक, शमा अन्तर आपणी आप जगाईआ। साची मंज़ल जाए पहुंच, जिथ्थे जगत विकार ना कोई अटकाईआ। मन बुद्धि दी रहे कोई ना सोच, वासना कूड़ ना कोई भरमाईआ। झगड़ा रहे ना कोई जीव लोक, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। नाम निधाना सुणे इक्क सलोक, जिस दे सोहले सिफ्त सलाहीआ। सच दवारे लग्गी वेखे मौज, महबूब मजलस भगतां नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाईआ।

जन भगत वेखे आपणा पिछला घराना, जिस विच्चों होई जुदाईआ। जिस दा

मालक इक्को इक्क श्री भगवाना, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। ओथे दिसे ना कोई बेगाना, वैरी वैर ना कोई कमाईआ। कूड़ा दिसे ना कोई निशाना, जूठ झूठ नज़र कोई ना आईआ। इक्को तख़त बैठा शाह सुलताना, तख़त निवासी सोभा पाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां देवे नाम दाना, भगतां भगती विच्च लगाईआ। जुग चौकड़ी खेल खेलदा रहे विच्च जहाना, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। निरअक्खर धार अक्खरां वाला बणौंदा रहे गाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ।

जन भगत घर मन्दर आपणे वेखे मीत, मित्र प्यारा हरि जू नज़री आईआ। जिस दा झगड़ा नहीं हस्त कीट, ऊँच नीच वंड ना कोई वंडाईआ। साचा नाम सभ नूं दस्से हदीस, हाजर हो के हज़रतां करे पढ़ाईआ। मनूआं शैतान ना रहे अबलीस, लाहनत जामा गल ना कोई पवाईआ। जन भगतां रक्खे सदा उडीक, सूफ़ी सन्तां राह तकाईआ। साचे नाम दी करे तबलीक, तरतीब वार सदा समझाईआ। गुरमुखां बदल देवे नसीब, नसल धुर दी दए समझाईआ। घर वखाए इक्क अज़ीब, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगग्बर कर के गए ताअईद, सो सचखण्ड दवारा दए जणाईआ। जिथ्थे भगतां प्रभ मिलण दी सदा रहे उम्मीद, विछोड़े विच्च विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां साचे दर दए टिकाईआ।

जन भगत आपणा गृह मन्दर वेखे कोठा, कुटीआ सोहणी नज़री आईआ। जिस नूं समझे कोई ना लंबा चौड़ा छोटा, नाप विच्च ना कोई रखाईआ। जिथ्थे इक्को प्रकाश देवे निरगुण जोता, आदि जुगादि सदा रुशनाईआ। कोटां विच्चों जन भगत सुहेले विरले मिलदा मौका, जो मन्दर चढ़ के अंदर वड़ के खुशी मनाईआ। हक़ हकीकत दा देवे होका, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पैंडा मुके चौदां लोका, चौदां तबकां लहणा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाईआ।

जन भगत आपणा गृह मन्दर वेखे धुर दा मठ, पड़दिआं विच्चों पड़दा फाश कराईआ। जिथ्थे नूर नुराना जोत रोशन होवे लट लट, अन्ध अन्धेर नज़र कोई ना आईआ। इक्को सोभावन्त सोभा पाए पुरख समरथ, जिस दी महिंमा सदा अकथ्थ, कथनी कथ ना सके राईआ। जिस दे चरन कँवल पैगम्बर अवतार गुरू शुरु तों जाण ढठ्ठ, अन्त नूं ओसे विच्च समाईआ। जो कलिजुग अन्त श्री भगवन्त शब्दी धार अंदर कर इक्ठ, एकँकार वेख वखाईआ। जन भगतां कारन खोल्ह के हट्ट, भगत दवार दिती वडयाईआ। चार वरन अठारां बरन सभ दा सांझा रक्ख के हक़, हकीकत धुर दी दिती जणाईआ। दीन मज़्हब दी रहे ना कोई वट्ट, शरअ करे ना कोई लड़ाईआ। ऊँच नीच दा दिसे कोई ना हट्ट, सभ दा मालक इक्को नज़री आईआ। जो सरन सरनाई जाए ढठ्ठ, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। उह लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड आकाश प्रकाश विच्च जावे टप्प, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। सचखण्ड दवारे साचे घर जावे वस, जिथ्थे मेला होवे शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां

सचखण्ड दवारे दे के धुर दा हक़, हिकमत नाल कूड़ी हकूमत दए बदलाईआ। (१६ जेठ श सं २ करतार सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत प्रभ चरन धूढ़ी ख़ाक रमाए जिस्म, रोम रोम विच्च समाईआ। धूणी ताए ना जगत कूड़ी वेखे भसम, सवाह सीस ना कोई पवाईआ। सच सुगंध प्रभू प्रेम प्रीती खाए कसम, किस्मत आपणी लए बदलाईआ। सद दर्शन लोड़े नूरे चशम, अक्ख परतख नज़र आए गुसाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वडयाईआ।

जन भगत नूर विच्चों लोड़े नूर, जहूर विच्चों जहूर करे रुशनाईआ। मंज़ल विच्चों मंज़ल नेड़े करे दूर, दूर दा दरा बन्द कराईआ। हाज़री विच्चों हाज़र तक्के हज़ूर, हज़रत धुरदरगाहीआ। शुकरीए विच्च शुकर करे मशकूर, मुशकल विच्चों मुशकल आपणी हल कराईआ। विछोड़े विच्च विछड़ कदे ना रहे मजबूर, मजबूरी मखमूरी विच्च बदलाईआ। सदा सदा सद अमृत रस दा चक्ख इक्क सरूर, जो सवरन पारस दोहां तों अग्गे लेखा दए बताईआ। खुशी विच्च सदा होवे मशकूर, साहिब मुसाहिब आपणा इक्क मनाईआ। ग़ुरबत तन ना रहे ग़रूर, ग़रीब निमाणा हो के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म जन्म दा मेट कसूर, कुशल कुशलता झोली पाईआ।

जन भगत कदे ना होवे औखा, दुखड़े विच्च ना दुःख समाईआ। आपणा पन्ध मुकावे सौखा, सुखमण विच्च ना कोई अटकाईआ। मनूआं देवे कोई ना धोखा, धूंआंधार ना कोई कराईआ। पढ़ना पए ना कोई पोथा, पुस्तक हत्थ ना कोई उठाईआ। पन्ध मुकावे लोक परलोका, भज्जे वाहो दाहीआ। गावे इक्क सलोका, सोहँ राग अलाहीआ। प्रभ मिलण दा रक्ख के शौंका, शाकर हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम निधाना जन भगतां अंदर वजाए अगम्मी धौंसा, भय विच्च विकार दए कढ्ढाईआ।

जन भगत सुणे इक्को धौंसा डंका, नाअरा बेपरवाहीआ। जो जाणया राजे जनका, जन अंदरों दिता कढ्ढाईआ। जिस कारन फेरया मन का मणका, अशट बक्कर मिली वडयाईआ। भाग होया साचे तन का, तन माटी ख़ाकी सोभा पाईआ। प्रकाश होया अगम्मी चन्न का, नूर नूर नूर रुशनाईआ। भंडारा मिल्या धुर दे नाम धन का, घर खज़ाना दिता टिकाईआ। राग सुणना चुक्कया कन्न का, काया मन्दर अंदर शब्द सुणे शनवाईआ। माण रिहा ना हउँ हम का, हँ ब्रह्म रूप आपणा नज़री आईआ। झूठा नाता दिसया चमड़ी चम्म का, चम्म दृष्टी लई बदलाईआ। लेखा ला के पवण स्वास दम दा, दामनगीर इक्को श्री भगवान लिआ बणाईआ। जो ना मरे ना कदे जम्मदा, जूनी विच्च लक्ख चुरासी रिहा भवाईआ। जन

भगतां कदे ना डंनदा, लक्ख चुरासी सज़ा दए भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां वक्त सुहञ्जणा करे धन्न धन्न धन्न का, धर्म दवारा एकँकारा साचा गृह सचखण्ड इक्को इक्क वखाईआ । (१६ जेठ श सं २ बेला सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत तेरा वड घराना, घर बाहर इक्को इक्क दसाईआ। उच्च अगम्म अथाह टिकाणा, टकयां वाला कोई पहुंच ना सके राईआ। जिथ्थे तूं मेरा मैं तेरा होवे गाणा, गावण वाला नज़र कोई ना आईआ। दीपक जोत जगे महाना, बिन नूर नूर रुशनाईआ। सोभावन्त होवे साचा काहना, राधा आपणा खेल खिलाईआ। तख़त निवासी होए श्री भगवाना, शाहो शाबाशी शहनशाहीआ। जो भगतां देवण आए फ़रमाणा, धुर दा हुक्म इक्क समझाईआ । इष्ट देव इक्क मनाना, दूजी टेक ना कोई बंधाईआ। दरस करो रूप नाना, नर नरायण होए सहाईआ। लेखा चुक्के आवण जाणा, जानशीं आपणे लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां उपर होए आप मेहरवाना, मेहर धुर दी नाल तराईआ। (२३ चेत श सं २ बंता सिँघ दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगतां प्रभ सदा विचोला, जुग विछड़े मेल मिलाइंदा। नाम दस्स के धुर दा साचा ढोला, ढोल माही हो के दया कमाइंदा। माण वड्डिआई दे के उपर धरनी धरत धौला, धर्म धुर दा इक्क समाइंदा। लेखे लाए मूर्ख मुगध कमला, कमलापाती आपणे रंग रंगाइंदा । बिरथा जाण ना देवे मानस जन्मा, कुड़यां कर्मी विच्चों बाहर कढाइंदा। संसा रोग चुकाए भरमा, माया ममता मोह मिटाइंदा। झगड़ा मुका के वरनां बरनां, ब्रह्म मत इक्क समझाइंदा। इक्को पुरख अकाल दी साची सरना, जो सरन आया सरासर पार लंघाइंदा। झगड़ा रहे ना फेर मरना, मरन तों पैहलों जन्म आपणे घर दवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा ढोला सभ ने पढ़ना, पाटे चीथड़ रंग अगम्मी आप रंगाइंदा। (२३ चेत श सं २ ज्ञान चन्द दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

हरिजन वेखे जागदे, लग्गा मात भाग। गुर अवतार आखदे, उच्ची कूक आवाज़ । एह गुरमुख सच्चे साध जे, जिन्हां मिल्या ग़रीब निवाज़। एह सदा सदा सद सति विच्च

विस्माद जे, जो बिन जिह्वा रहे आराध। एन्हां प्रभू सवारे काज जे, जो हरि सरनाई गए लाग। सच पुछो बिन करनीउँ बिन कमाईउँ बिन नाम बिन शब्द बिन किरत आपणे हत्थ विच्च पकड़ी वाग, चारों कुण्ट आप फिराईआ। मेहर नज़र नाल दुरमत मैल धोता दाग़, कूड़ी क्रिया परे हटाईआ। अंदर वड़ के पौड़े चढ़ के दवारे खड़ के मारे आवाज़, सुत्तयां लए जगाईआ। आओ मिलो वेखो गुरू महाराज, जिस दा शास्त्र सिमरत रहे जस गाईआ। जिस दा ईसा मूसा मुहम्मद कलमा पढ़दे नमाज़, हज़रत आया बेपरवाहीआ। जिस दा बेड़ा इक्क जहाज़, चार वरनां रिहा चढ़ाईआ। लेखा दे के विच्च महीने माघ, ...(१६-७६०)